वीर शिरोमणि

राज चौहान

डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा
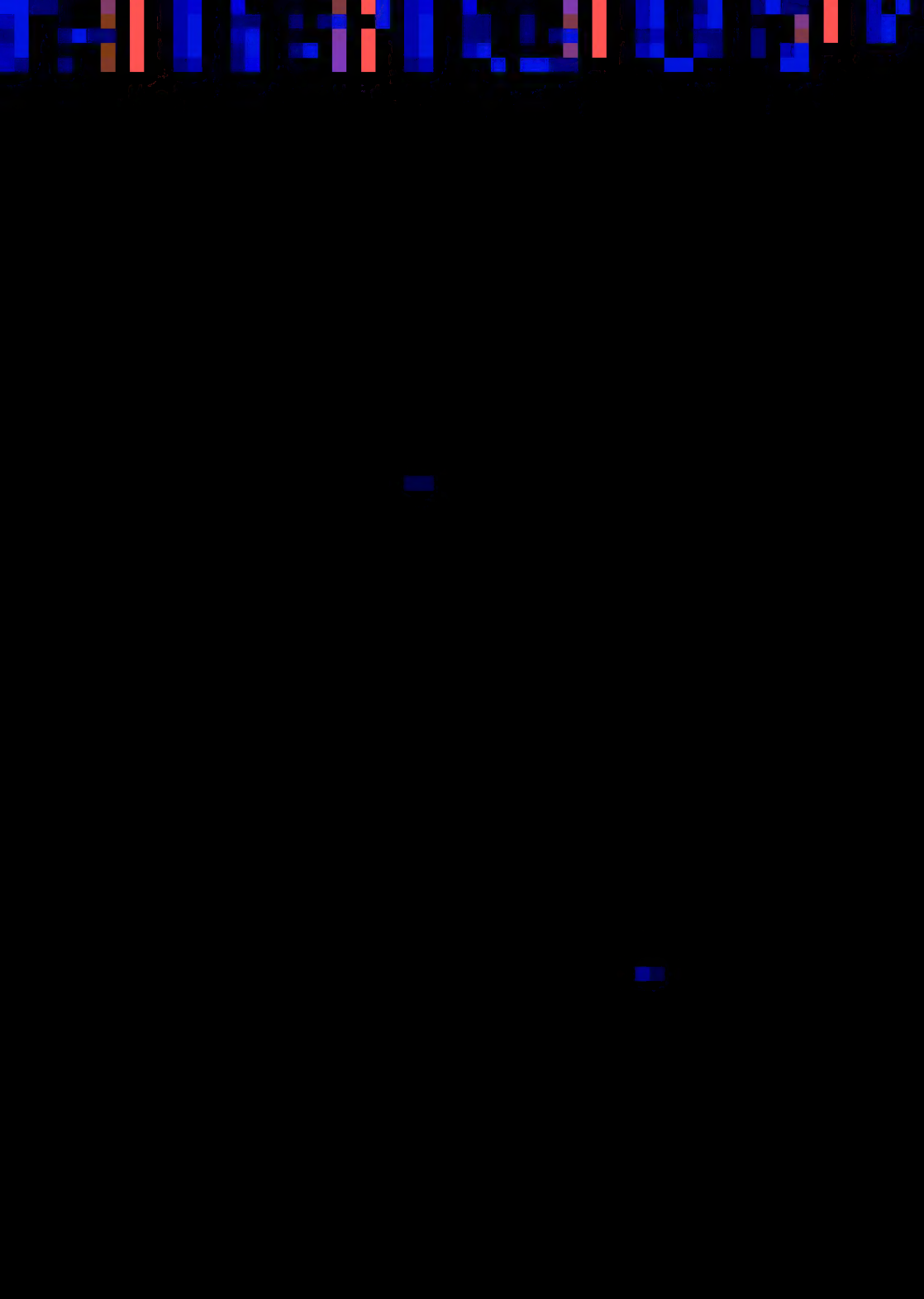
सूर्य प्रातःकाल का शोभित हुआ नभ में अहा।
रक्तवर्णी रथ लिए विद्युत्गति से जा रहा॥
कैसी अनोखी गर्जना, कम्पित हुआ आकाश है।
महाकाल मर्दन को चला, क्रोधित हुआ साक्षात् है॥
धूल उड़ती यों लगे, ज्यों आ रहा तूफान है।
अश्व-टापों की ध्वनि! क्या आ रहा शैतान है॥
डर छोड़ दो निश्चित हो, देखो ध्वजा फहरा रही।
फौज यह तो जा रही है, पृथ्वीराज चौहान की॥

****

मंत्री : (पत्र पढ़ता है) -हे क्षत्रिय कुलभूषण, वीर शिरोमणी दिल्ली नरेश! अपने चरणों में इस निर्बल, असहाय अबला का प्रणाम स्वीकार करें। हे पृथ्वीपति! इस समय मेरा जीवन मंझधार में है जिसे आप ही बचा सकते हैं। मैंने आपको मन से अपना आराध्य देव मान लिया है। इसलिए मैंने प्रण किया है कि यदि आपने मुझ दासी को स्वीकार नहीं किया तो मैं अपना जीवन समाप्त कर लूंगी। अतः हे प्राणेश! यह जीवन अब आपके हाथ है, चाहें तो इसे बचा लें, चाहें तो मिटा दें।

आपकी अभागिनी दासी
संयोगिता

****

जोधमल : -पुरस्कार के लिए क्षमा करें महाराज! मैं एक क्षत्रिय हूँ और पुरस्कार लेकर क्षात्र धर्म को कलंकित नहीं करूँगा।

****

राजभट्ट- राजपूत अजमेर के श्री सोमेश्वर नाम।
उनके ही ये पुत्र हैं, पृथ्वीराज चौहान॥
आन-बान इनकी बड़ी शेरों की सन्तान।
चौहानों के वंश का चमकाया है नाम॥
गौरी को जीवन दिया, माफ किया हर बार।
धन- धन इनकी कीर्ति दुश्मन से

वीर शिरोमणि

पृथ्वीराज चौहान

वीर शिरोमणि

वीराज चौहान

लेखक

डॉ० कैलाश चन्द्र शर्मा

वीर शिरोमणि

पृथ्वीराज चौहान

(ऐतिहासिक नाटक)

डॉ० कैलाश चन्द्र शर्मा

मूल्य

अस्सी रुपये मात्र

संस्करण

2003

प्रकाशक

साहित्यागार

धामाणी मार्केट की गली,

चौड़ा रास्ता , जयपुर-3

वितरक

बाणगंगा प्रकाशन

बी-177, नित्यानन्द नगर,

क्वीन्स रोड़, जयपुर-21

आई.एस.बी.एन

81-7711-031-4

लेजर टाईपसैटिंग

साहित्यागार कम्प्यूटर्स

मुद्रक

शीतल ऑफसैट, जयपुर

ताजी स्व. श्री गणेश दास शर्मा
की चिर स्मृति में
श्रद्धानत् सादर
समर्पित
ऽ ही आशीर्वादस्वरूप भारतीय
ति, साहित्य एवं कला के प्रति
अनुराग उत्पन्न हुआ।

दो शब्द

राजस्थान वीरों की भूमि है। इसके कण--कण में शौर्य, वीरता तथा त्याग की गाथाएं गुंफित हैं। यह महाराण प्रताप, हठी हम्मीर, पृथ्वीराज चौहान, चंदबरदाई, मीरांबाई, दादूदयाल और संत सुन्दरदास की भूमि है। अपनी वीरता, शौर्य और देशभक्ति के लिए राजस्थान की विश्वभर में अपनी एक अलग पहचान है।

राजस्थान के राजपूत वीरों का नाम आते ही पृथ्वीराज चौहान का नाम मस्तिष्कपटल पर उभर आना स्वाभाविक है। चौहान वंश के गौरव पृथ्वीराज चौहान एक धर्मप्रिय–दयालु शासक होने के साथ ही साथ सुन्दरता के पुजारी भी थे।

राजपूताने के इस महान् योद्धा का जन्म 1166 ई० में हुआ। इनके दिल्ली के राज सिंहासन पर बैठने की घटना के साथ ही इनका मौसेरा भाई जयचन्द इनका दुश्मन बन बैठा। सम्राट पृथ्वीराज चौहान की वीरता से अनेक सुन्दरियां प्रभावित थीं और केवल मात्र अपने 27 वर्ष के जीवन काल में पृथ्वीराज ने कई सुन्दर रमणियों से विवाह रचाये, जिनमें से संयोगिता भी एक थी।

इस नाटक में मैंने 'वीर शिरोमणि के रूप में' पृथ्वीराज चौहान को प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति प्रदान कर राजपूतों की वीरता, क्षमाशीलता, क्षात्र धर्म के पालनार्थ वीरों की युद्ध में आहूत होने की तीव्र उत्कण्ठा, वीरमाताओं द्वारा इस हेतु अपने पुत्रों को दिया गया प्रोत्साहन, देश और कौम के सांस्कृतिक मूल्यों की विद्यमानता, वीर–पुत्रियों द्वारा वीरता का वरण, चाकरों की भक्ति एवं देशद्रोहियों की राष्ट्रविरोधी भावना आदि से वर्तमान पीढ़ी को साक्षात्कार कराने का लघु प्रयास किया है। इसके लिए मुझे साहित्य के पन्नों को भी उलटने–पलटने से गुजरना पड़ा, जहाँ मैंने पृथ्वीराज चौहान के सम्बन्ध में अनेक विरोधाभाषी कथन एवं मतों का अनुभव किया। कुछ इतिहासकारों का संयोगिताहरण के बारे में मतभेद है तो कुछ अन्य का पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के बारे में।

सर्वाधिक विवाद एवं विरोधाभास पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु के बारे में देखा गया है। कुछ इतिहासकारों का मत है कि पृथ्वीराज चौहान 1193ई० मे तराईन की दूसरी लड़ाई के बाद मुहम्मद गौरी के हाथों मारा गया। कुछ विद्वानों के मतानुसार गौरी ने उसे अन्धा कर दिया और बन्दी बनाकर अपने साथ गजनी ले

गया जहाँ पर कवि चन्द ने अपनी कविता के माध्यम से पृथ्वीराज चौहान को सद्गति का मार्गदर्शन देकर उसके साथ ही मृत्यु का वरण किया।

मैंने अपने इस नाटक में जन-प्रचलित इसी मत को स्वीकार करते हुए पृथ्वीराज के चरित्र को इस कृति में उभारा है। यह नाटक एक ऐतिहासिक कृति के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत हो यह मेरा मूल उद्देश्य न था, अपितु मैंने अपनी इस कृति के माध्यम से देश के शूरमाओं के त्याग, बलिदान, तपस्या तथा धैर्य को वर्तमान पीढ़ी तक पहुंचाने का प्रयास किया है।

इस नाटक के सृजन की प्रेरणा मुझे 'जयपुर तमाशा' शैली के युवा कलाकार श्री दिलीप भट्ट से मिली। 'तमाशा शैली' में मेरी यह प्रथम कृति है। जिसके श्री दिलीप भट्ट के निर्देशन में रवीन्द्र मंच जयपुर के मुख्य सभागृह में 15 जुलाई 1997 को किये गये मंचन को जयपुर के दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया।

तमाशा शैली एक विशिष्ट नाट्यशिल्प है, जिसमें संगीत की गायकी और तालबद्धता के साथ-साथ सूत्रधार द्वारा कथानक को प्रस्तुत किया जाता है। नाटक के मंचीय प्रस्तुतीकरण में जयपुर तमाशा शैली के वयोवृद्ध कलाकार श्री गोपीकृष्ण भट्ट द्वारा संगीत निर्देशन प्रदान किया जाना निश्चय ही मेरे लिये गौरव का विषय है।

इस को मूर्त रूप प्रदान करने में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष में त्रिवेणी कला संगम जयपुर की अध्यक्षा, श्रीमती रेनूरानी शर्मा, रंगमंच के कलाकार काजल शर्मा एव अभिषेक शर्मा द्वारा जो प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला वह सदैव मेरे लिए अविस्मरणीय रहेगा।

मेरी यह कृति साहित्यागार जयपुर के प्रोपराइटर श्री रमेश वर्मा के सहयोग से आप लोगों तक पहुंच सकी है, जिसके लिये मैं उनका आभारी हूं। मुझे उम्मीद है कि पाठकों से मिले सुझाव एवं प्रोत्साहन मेरे भावी सृजन को परिष्कृत करेंगे।

कैलाश चन्द्र शर्मा

(डॉ० कैलाश चन्द्र शर्मा)
मानसेवी प्राचार्य,
त्रिवेणी संगीत महाविद्यालय
बी-१७७, नित्यानन्द नगर क्वीन्स रोड़, जयपुर
दूरभाष 0141-352371

सम्राट पृथ्वीराज चौहान की संक्षिप्त जीवनी

प्रारम्भिक जीवन

जिन दिनों दिल्ली के राजा अनंगपाल एवं कनौज के राजा में युद्ध हुआ उस समय अजमेर के चौहान वंशज राजा सोमेश्वर ने दिल्ली के राजा अनंगपाल की सहायता की थी। इस युद्ध में कन्नौज के राजा की पराजय एवं अपनी विजयश्री से अनगपाल अजमेर के राजा सोमेश्वर से प्रसन्न हुए और उन्होंने अपनी पुत्री कर्पूर देवी का विवाह सोमेश्वर से कर दिया। अनंगपाल की इसी पुत्री के गर्भ से 1166 ई0 मे पृथ्वीराज का जन्म हुआ। श्री आयुवान सिंह स्मृति संस्थान, 39 रेजेडेन्सी ऐरिया, सरदार पटेल मार्ग जयपुर द्वारा प्रकाशित एवं ठाकुर श्री सवाई धमोरा द्वारा लिखित पुस्तक 'सम्राट चौहान पृथ्वीराज' में पृथ्वीराज का जन्म अश्विन शुक्ला 13 वि0 सं0 1206 मे अनगपाल तंवर की पुत्री कमला तंवर के गर्भ से होना बताया है।

इससे पूर्व अनंगपाल ने अपनी बड़ी पुत्री सुर सुन्दरी का विवाह कन्नौज के राजा विजयपाल राठौड़ से किया था, जिससे जयचन्द का जन्म हुआ। इस प्रकार पृथ्वीराज और जयचन्द मौसी के बेटे भाई थे। अनगपाल के कोई पुत्र नहीं था, अत उन्होंने पृथ्वीराज को आठ वर्ष की आयु में दिल्ली का राजा घोषित कर दिया। आगे चलकर इसी कारण पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता हो गई।

जब पृथ्वीराज का जन्म हुआ तो उसके नाना अनंगपाल ने जगज्योति व्यास को बुलाकर जन्म लग्न लिखवाया। व्यास ने इसे बड़ा पराक्रमी एवं विजयश्री वरण करने वाला बताया। राजा सोमेश्वर कुछ दिनों पश्चात् अपने सामन्त लौहाना के साथ दिल्ली गया और एक बड़े उत्सव के पश्चात् अपने पुत्र को लेकर वापस अजमेर लौटा।

बचपन में पृथ्वीराज ने एक स्वप्न देखा कि एक योगिनी ने उसके ललाट पर स्वय अपने हाथो से दिल्ली का राजतिलक कर दिया है। पृथ्वीराज ने अपनी माता की इस स्वप्न की जानकारी दी। रानी ने सभी ज्योतिषियो को बुलाकर इस स्वप्न का भविष्य पूछा। ज्योतिषियों ने कहा कि पृथ्वीराज शीघ्र ही दिल्लीपति होंगे।

पृथ्वीराज के विवाह

नाहरराज प्रतिहार ने अपनी पुत्री का विवाह उसके बाल्यकाल में ही पृथ्वीराज से करना तय कर दिया था, परन्तु आगे चलकर उन्होने अपना विचार त्याग दिया। इसी कारण पृथ्वीराज को प्रतिहारो से युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में पृथ्वीराज ने प्रतिहारों को परास्त कर उन्हें सन्धि करने पर विवश कर दिया और नाहरराय ने अपनी पुत्री का विवाह पृथ्वीराज के साथ कर दिया।

पृथ्वीराज का दूसरा विवाह

पृथ्वीराज का दूसरा विवाह आबू के परमारों के यहाँ हुआ था। इस विवाह में चारों वर्णों को पॉच दिन तक परमार राजा ने विशिष्ट भोजन दिया था और बारात को पॉच कोस तक साथ चलकर स्वयं परमार राजा सलख जैन ने स्नेहपूर्ण विदाई दी थी।

पृथ्वीराज का तीसरा और चौथा विवाह

परमार कुमारी इच्छिनी से विवाह के एक वर्ष बाद पृथ्वीराज ने चन्द पुण्डीर से उसकी परम सुन्दरी कन्या का हाथ मागा जिसे चन्द पुण्डीर ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उन्हीं दिनों पृथ्वीराज के चित्त में बयाना के राजा दाहिमराज दायमा की कन्या का ख्याल आया। राजा की इच्छा देखकर दाहिमराज ने भी अपनी स्वीकृति दे दी। दाहिमराज का बयाना दुर्ग उन दिनों वैभव का भण्डार था। 2000 सैनिक योद्धा उनके साथ थे। तीन पुत्र और दो पुत्रियॉ थीं। पहला पुत्र चामुण्डराय पहले से ही पृथ्वीराज की सेवा में था। बयानाधिपति ने अपनी दूसरी पुत्री की सगाई मेवाती मुगल से की। दोनों का विवाह चैत्र शुक्ला 3 की गोधूलि बेला में साथ–साथ ही हुआ, परन्तु तोरण का दस्तूर पहले पृथ्वीराज ने किया। इसी दाहिमी रानी से पृथ्वीराज को रयणसीदेव पुत्र रत्न प्राप्त हुआ। उसी के कारण रनवास में स्वर्ण थाल बजे।

गोरी शाह का हमला और पृथ्वीराज का पाँचवां विवाह

दिल्ली से पूर्व समुद्र शिखर का वर्ग था जिसका स्वामी विजय–सुर प्रतापी था। उस राजा के दस पुत्र और एक पुत्री थी। इसके राजकुमारों में पद्मसेन बड़ा ही सुघड क्षत्रिय था। पद्मसेन के पद्मावती नाम की एक सुन्दर कन्या थी। उसकी सगाई कुमायूंगढ़ के कमोदनी राज से की गई थी।

बागों में विहार करती यादव कुमारी ने एक दिन एक शुक (सुवा) पकड़

लिया वह शुक पृथ्वीराज के शहर दिल्ली का था शास्त्रवेत्ता होने के कारण उसकी वाणी पर राजकुमारी मुग्ध हो गई और उसे अपने राज़ प्रासाद मे ही रखने लगी। उस शुक से पृथ्वीराज की वीरता की कहानी सुनकर वह चौहान राज को अपना हृदय दे बैठी। उसने उस शुक के द्वारा पृथ्वीराज को सन्देशा भिजवा दिया कि आप श्रीकृष्ण की भाँति मुझ रूक्मणी का हरण कर पाणिग्रहण करो, मैं आपकी भार्या हूँ।

पृथ्वीराज दिल्ली का दुर्गाध्यक्ष चामुण्डराय को बनाकर उसी क्षण तैयार हो गया। जिस दिन कुमायूं नरेश की बारात समुद्र शिखर पहुँची, उसी दिन पृथ्वीराज भी पहुँच गये। यह समाचार जब गौरी शाह तक पहुँचा तो उसने भी शुभ अवसर जानकर आक्रमण कर दिया। जब पद्मावती का हरण कर पृथ्वीराज दिल्ली लौट रहा था, तब गौरी ने उसकी राह रोकी। दोनो में घमासान युद्ध हुआ जिससे अनगिनत योद्धा मारे गये और चौहान सामन्तों ने गौरी को बन्दी बना लिया। पृथ्वीराज गौरी को बन्दी बनाकर दिल्ली आ गया जहाँ पर शुभ लग्न में पद्मावती से उसका विवाह सम्पन्न हुआ और बादशाह गौरी से आठ हजार घोड़ों का दण्ड लेकर उसे छोड़ दिया गया। इस प्रकार पृथ्वीराज ने अपने पॉचवे विवाह के उत्सव में तीसरी बार गौरी को क्षमादान दिया।

थ्वीराज का शशिवृता से विवाह

एक बार सम्राट पृथ्वीराज के दरबार में एक नर्तक (नट) आया जो देवगिरि का निवासी था। उस नट ने तवनपाल की कुँवरी शशिवृता के रूप–लावण्य की सम्राट से चर्चा की। सम्राट को इस नट से शशिवृता का वृत्तांत सुनकर श्रोता–अनुराग उत्पन्न हो गया। नट ने सम्राट को विश्वास दिलाया कि वह इस बात का प्रयत्न करेगा कि शशिवृता सम्राट की अर्द्धांगिनी बने। सम्राट शशिवृता को प्राप्त करने हेतु शिव–उपासना मे लग गया और तपस्या से प्रसन्न हो शिवजी उसे मन वांछित फल प्राप्ति वचन दिया।

एक दिन राजा तवनपाल के दूत हंसद्विज ने पृथ्वीराज के यहाँ उपस्थित होकर बताया कि कुँवरी शशिवृता की सगाई जयचन्द राठौड़ के भाईयों में से वीरचन्द से तय की गई थी, परन्तु शशिवृता आप ही को पति रूप मे प्राप्त करना चाहती है।

पृथ्वीराज ने द्विजहंस को अपनी स्वीकृति देकर विदा किया और स्वय चतुरंगिनी सेना सहित माघ कृष्ण पंचमी शुक्रवार को देवगिरि की ओर प्रस्थान किया। यहॉ पर पृथ्वीराज एवं वीरचन्द की सेना में घमासान युद्ध हुआ और माघ शुक्ला त्रयोदशी को पृथ्वीराज अपनी अब्याही परिणिता शशिवृत्ता को लेकर दिल्ली पहुँचा

ृथ्वीराज का हंसवती यदुवानी से विवाह

सम्राट पृथ्वीराज ने देवगिरी–देवास के यदुवंशी राजा भानुराय को रणथम्भौर दुर्ग में शरणागत के रूप में रखा था क्योकि उसकी बडी पुत्री का पृथ्वीराज के साथ विवाह होने के पश्चात् पड़ौसी राज उसकी दूसरी कन्या को हरण की योजना बना रहे थे। भानुराय का विपक्षी चंदेरी का राजा पंचायन उससे विवाह करना चाहता था। राजकुमारी हंसवती को पृथ्वीराज से श्रोता अनुराग हो गया था। शिशुपाल के वंशज चदेरी राज पंचायन ने रणथम्भौर भानुराय के पास दूत भेजकर हंसवती का हाथ मागा परन्तु भानुराय ने स्पष्ट ना करते हुए कहा कि, "मैं कन्या की इच्छा के विपरीत यह सम्बन्ध तय नहीं करूंगा। क्षत्रीय की कन्या से कोई बलात् ब्याहने की इच्छा करे उससे क्षत्रीय मुकाबला ही करते हैं, सम्पर्क नहीं, यह चंदेरी राज को ज्ञात ही है। चंदेरी राज को जब दूत से यह समाचार मिले तो उसने रणथम्भौर पर चढ़ाई कर दी। उसने इस हेतु 'शत्रु का शत्रु मित्र' की उक्ति के अनुसार गौरीशाह से भी रण में मदद चाहने हेतु अपन्त दूत वहाँ भेजा।

यादवराज ने यह समचार सम्राट के पास दिल्ली भेजकर वस्तु स्थिति से अवगत कर दिया कि 50 हजार सैन्य बल रणथम्भौर की ओर उमड़ रहा है, अतः हम्भीर राव हठी हांडा, प्रसंगराय खींची तथा चित्तौड़ के अहाडों का इस रक्षात्मक युद्ध में आना आवश्यक है। सम्राट पृथ्वीराज ने भानुराय का पत्र पाकर अहाडा कान्ह को चित्तौड के रावल समर केसरी के पास तद्नुकूल कार्यवाही हेतु रवाना कर दिया। रावल समर केसरी की योजनानुसार रावल समर केसरी तथा पृथ्वीराज दोनों की सेना ने चंदेरी व गौरी की संयुक्त सेना को दोनों ओर से घेर लिया। इस युद्ध में पृथ्वीराज को विजयश्री मिली तथा उसने रणथम्भौर में प्रवेश कर हंसवती यदुवानी से विवाह किया।

''''''

पृथ्वीराज का खड्ग विवाह

सारंगीपुर के राज भीम परमार ने जब सुना कि सम्राट पृथ्वीराज विवाह हेतु स्वयं न आकर अपना खड़ग भेज रहे हैं, तो उसने अपनी पुत्री इन्द्रावती का विवाह अन्यत्र करने का निश्चय कर लिया। यद्यपि स्वयं इन्द्रावती ने अपने पिता के इस निश्चय के विपरीत पृथ्वीराज से ही विवाह करने का दृढ़ मन्तव्य व्यक्त किया।

जब कछवाहा पजवनराय के नेतृत्व में कवि चन्द वरदाई खड़्ग लेकर सारंगीपुर पहुँचे तो राजा भीम परमार ने कहा कि मैं बराबर का सम्बन्धी हूँ। पृथ्वीराज और उसके सामन्तों को गौरी शाह को बार–बार बन्दी बनाने से अभिमान हो गया है और इसीलिए वे अन्य किसी को अपने समान नहीं समझते। यह सारंगीपुर के परमारो का अपमान है कि पृथ्वीराज विवाह करने स्वयं न आकर अपना खड़्ग भेज रहा है। मै इसे अपना अपमान समझता हूँ और मैं अपनी कुमारी का विवाह अन्यत्र ही करूँगा।

कविचन्द ने समझाया कि पृथ्वीराज विवाह हेतु स्वय ही आ रहे थे परन्तु एकाएक उनके बहनोई रावल समर विक्रम का संदेश मिला कि चालुक्य भीम द्वारा चित्तौड़ पर हमला कर दिया गया है और इसी कारण रण निमंत्रण पाकर उन्हें चित्तौड जाना पड गया, और अब हम सामन्तों की लाज आपके हाथ है। परन्तु राजा भीम परमार न माना और विवश होकर पृथ्वीराज के सामन्तों को उससे युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में पृथ्वीराज के सामन्तों को विजय मिली और वे पृथ्वीराज के खड़्ग से इन्द्रावती के विवाह की रस्म अदा कर राजा भीम द्वारा दहेज में दिये गये एक सौ हाथी तथा दो हजार घोड़ो के साथ इन्द्रावती को लेकर राजधानी दिल्ली पहुँचे।

पृथ्वीराज के शत्रु

पृथ्वीराज जब गद्दी पर बैठा तो चौहान राज्य चारों तरफ से शत्रुओं से घिरा हुआ था। सिन्ध के मुसलमान जिनमें महमूद गजनवी जैसे योग्य व विस्तार नीति के समर्थक, उसके परम शत्रु थे। दक्षिण–पश्चिम में गुजरात के चालुक्य अपनी पराजय का बदला लेना चाहते थे। दक्षिण–पूर्व में महोबा के चंदेल और पूर्व में कन्नौज का राजा जयचंद अपने आपको बडा मानकर उससे दिल्ली छीनना चाहता था। ये तो बाहर की कठिनाइयाँ थीं लेकिन पृथ्वीराज को तो आन्तरिक विद्रोहों का भी सामना करना था। पृथ्वीराज को बालक समझ कर उसी के रिश्तेदार ने ज़ो विग्रहराज का लड़का था, विद्रोह कर दिया और गुडा पुरा पर अपना अधिकार जमा लिया यह विद्रोही नागार्जुन

था। अकबर का शाही दरबारी लेखक अबुल फजल तो नागार्जुन को अजमेर का राजा कहकर सम्बोधित करता था। स्पष्ट है कि पृथ्वीराज को विरासत में जहाँ एक बड़ा साम्राज्य मिला था वहाँ उसका पथ फूलों का न होकर कांटो भरा था। पृथ्वीराज के महत्वाकांक्षी पूर्वजों ने उसे कांटों का ताज पहनाया था।

यहाँ यदि चौहान राज्य की सीमा भी आँक लें तो अनुचित नहीं होगा। पृथ्वीराज के पूर्वजों की निरन्तर विजय के परिणामस्वरूप कन्नौज से लेकर नागौर तक और दिल्ली से लेकर आधुनिक जहाजपुर तक पृथ्वीराज को राज्य प्राप्त हुआ था। पृथ्वीराज भी अपने पूर्वजों की विस्तारवादी नीति का अनुकरण करता रहा। फलस्वरूप 1180 में जब उसने राज्य का प्रशासन कार्य अपने हाथ मे लिया तब से अपने शासन के अन्तिम वर्ष तक निरन्तर युद्ध ही करता रहा।

दिग्विजय कामना

प्राचीन भारत से यह प्रथा चली आ रही थी कि योग्य राजा अपने राज्य विस्तार के लिये दिग्विजय करते थे। पृथ्वीराज भी समुद्रगुप्त की तरह और सूर्यवंशी राजा राम की तरह सारे भारत को जीत कर यश कमाना चाहता था। इसी इच्छा की पूर्ति के लिये वह 1182 से 1193 तक लगभग दस वर्ष तक राज्य विस्तार के लिये युद्ध करता रहा। इससे पहले का समय आन्तरिक विद्रोह का दमन करने में लग गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि मुसलमानों का भय, आन्तरिक विद्रोह और दिगविजय की कामना ने पृथ्वीराज को युद्ध नीति अपनाने के लिये बाध्य कर दिया।

पृथ्वीराज की युद्ध नीति इस प्रकार रही–

1. नागार्जुन का दमन पृथ्वीराज का निकट सम्बन्धी नागार्जुन जो विग्रहराज का वंशज था, चौहानों का नेतृत्व अपने हाथ में लेना चाहता था। अपने पिता के देहान्त के समय पृथ्वीराज केवल आठ वर्ष का था। नागार्जुन ने इस अवसर का लाभ उठाकर अजमेर पर अपना अधिकार जमाना चाहा। अब्दुल फजल तो उसके विद्रोह को सफल मानकर उसे अजमेर का राजा कहकर पुकारते थे। पृथ्वीराज के लिये यह पहली समस्या थी। उसने सबसे पहले नागार्जुन के विद्रोहों का दमन किया। इस कार्य मे उसके योग्य मंत्री कैमास ने एक विशाल सेना संग्रह कर नागार्जुन पर आक्रमण किया और नागार्जुन को पराजित कर उससे गुडापुरा व अजमेर का क्षेत्र वापस छीन लिया। नागार्जुन अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो सका। यह योग्य मंत्री कैमास दाहिमा ब्राह्मण था जिसने नागार्जुन को मारकर राजनीतिक अर्थव्यवस्था को ठीक किया।

2 चालुक्य विजय

मुहम्मद गौरी ने सन् 1178 में गुजरात को रौंद दिया था। गुजरात के चालुक्य राजा अपनी इस क्षति की पूर्ति चौहानों के राज्य से करना चाहते थे। वे अपने राज्य का विस्तार आबू से नागौर तक करना चाहते थे। नागौर चौहानों के अधीन था अत क्षतिपूर्ति की भावना से चालुक्य उत्तर में राज्य विस्तार योजना बना रहे थे। पृथ्वीराज का अल्पायु होना उनके लिये एक स्वर्णिम अवसर बन गया और वे नागौर पर आक्रमण कर बैठे। अतः पृथ्वीराज को अपने पुराने शत्रु चालुक्यों से युद्ध करना आवश्यक हो गया। कुछ समयकालीन कथाएँ भी इस प्रकार की हैं कि पृथ्वीराज का पिता सोमेश्वर नागौर की रक्षा करते समय चालुक्यों के राजा भीमदेव द्वितीय के हाथों से मारा गया था। किन्तु ऐतिहासिक प्रमाण यह बताते हैं कि भीमदेव का देहान्त तो सोमेश्वर से दो वर्ष पहले ही हो गया था। यह सम्भव हो सकता है कि सोमेश्वर भीमदेव के उत्तराधिकारी जगदेव प्रतिहार के हाथों मारा गया हो। जो भी बात रही हो, पृथ्वीराज के लिये आवश्यक हो गया कि वह अपने पिता के हत्यारों से बदला ले। यदि पृथ्वीराज इनका दमन नहीं करता तो जगदेव नागौर लेकर ही मानता। अतः नागौर की रक्षा और अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये यह आवश्यक हो गया कि पृथ्वीराज गुजरात के चालुक्य राजा जगदेव को पराजित कर अपने अधीन कर ले।

'पृथ्वीराज रासो' में चौहान–चालुक्य युद्ध का वर्णन मिलता है। उसी आधार पर डॉ. दशरथ शर्मा यह कहते हैं कि नागौर पर जगदेव ने आक्रमण किया और दुर्ग के बाहर युद्ध मे दो योग्य सेनापति मारे गये। पृथ्वीराज ने इन योग्य सेनापतियो की स्मृति में बीकानेर डिवीजन में चारलू नामक गाँवे में 2 शिलालेख खुदवाये। ये लेख विक्रम सम्वत् 1241 के हैं जो इस युद्ध के बारे में पर्याप्त जानकारी देते है। इस युद्ध के बारे में खरगछा पट्टावली से भी जानकारी मिलती है। इस ग्रन्थ का लेखक जिनपाल है। इस प्रकार नागौर में लड़े गये चालुक्य–चौहान युद्ध के बारे में चार साध नो से सामग्री मिलती है। चारलू गाँव के दो शिलालेख, जिनपाल द्वारा रचित खरगछा पट्टावली और पृथ्वीराज चौहान ने नागौर के किले के बाहर लडे गये घमासान युद्ध मे गुजरात के चालुक्य राजा जगदेव को पूर्ण रुप से पराजित कर उसे सदा के लिये अपना सेवक बना लिया। जिनपाल लिखता है कि 'चालुक्य शासक ने अपने मुँह में दाब दबा क्र अपनी जान की भीख प्राप्त की।' इसी वर्ष पृथ्वीराज और जगदेव में स्थाई

सन्धि हो गई और जगदेव अपने जीवन के शेष वर्ष अपनी सन्धि को निभाता रहा। वि स 1241 में लड़े गये युद्ध के फलस्वरूप चौहानो और चालुक्यो की दीर्घकालीन शत्रुता समाप्त हो गई। पृथ्वीराज ने चालुक्य की ओर राज्य विस्तार की नीति को सदा के लिये समाप्त कर दिया। इस प्रकार वह गुजरात पर विजय पाने में सफल रहा।

3 <u>भण्डानकों का दमन –</u> चालुक्यों को पराजित करने के बाद पृथ्वीराज समस्त उत्तरी भारत को अपने अधीन करने के लिये उत्सुक हो गया, किन्तु आधुनिक अलवर भरतपुर और मथुरा जिले अभी उसके अधीन नहीं थे। इन जिलों पर भण्डानकों का अधिकार था। दिल्ली से जहाजपुर तक समस्त राजस्थान पर अधिकार जमाने के लिये इन भण्डानकों को रास्ते से हटाना आवश्यक था। दूसरी तरफ मे स्वतत्र शासक अपना राज्य विस्तार कर रहे थे और डॉ. दशरथ शर्मा का तो मत है कि आधुनिक रेवाडी हिसार और गुड़गांव पर भी इन लोगों ने अपना अधिकार जमा लिया था। इस प्रकार दिल्ली और अजमेर के बीच एक नई शक्ति का विकास हो रहा था। पृथ्वीराज ने अपनी सेना का नारायना (आधुनिक नरैणा जो फुलेरा और किशनगढ़ के बीच है) को अपना सैनिक केन्द्र बनाया और चालुक्यों को परास्त करने के बाद ही भण्डानकों के विरूद्ध युद्ध शरू कर दिया। भण्डानकों को घेरता हुआ पृथ्वीराज गुडापुरा (आधुनिक गुडगाव, दिल्ली के पास) ले आया और यहां एक ही निर्णयात्मक युद्ध में भण्डानकों को हराकर अलवर, भरतपुर, मथुरा, गुड़गांव, रेवाडी और हिसार के जिले अपने राज्य में मिला लिये। यह विजय निर्णयात्मक ही नहीं अत्यधिक महत्वपूर्ण थी।

4 <u>चंदेलों पर विजय –</u> चालुक्य और भण्डानको को हरा लेने के बाद पृथ्वीराज का साहस बहुत बढ गया और उसने पूर्व स्थित बुन्देलखण्ड के शासक चन्देलों को पराजित करने की योजना बनाई। उस समय बुन्देलखण्ड को जेजाक भूमि कहते थे। पृथ्वीराज की इस विजय का वर्णन हमें दो ग्रन्थो में मिलता है। एक तो 'पृथ्वीराज रासो' मे और दूसरा 'आला खण्ड' नामक महाकाव्य में। इसके अतिरिक्त पृथ्वीराज़ चौहान ने अपने मदनपुरा शिलालेख में भी अपनी बुन्देलखण्ड विजय का वर्णन किया है। इस लेख पर इस प्रकार लिखा है "सोमेश्वर के पुत्र महाराजाधिराज पृथ्वीराज ने 1241 वि स में बुन्देलखण्ड या जैजाक भूमि को पराजित किया।" इस समय चन्देलों का राजा परमारदीन था और उनकी राजधानी महोबा थी। पमारदीन ने कन्नौज गढ़वाल से सहायता मांगी और जिस समय पृथ्वीराज ने चन्देलों की राजधानी महोबा को घेर रखा

था उस समय गढ़वाली सेना ने भी पृथ्वीराज पर आक्रमण किया था। इस कथन की पुष्टि हमें 'प्रबन्ध चिन्तामणि' का अध्ययन करने से होती है। इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि अवसर से लाभ उठाकर जयचन्द ने भी कन्नौज की सेनाएँ महोबा भेज दी और इस प्रकार महोबा के युद्ध में पृथ्वीराज के विरुद्ध महोबा और गढ़वाल की सेनाओं ने युद्ध किया। साधारणतः यह मान लें कि महोबा का युद्ध एक निर्णयात्मक युद्ध था जिसने पूर्व से आक्रमण के भय को सदा के लिये समाप्त कर दिया। पृथ्वीराज ने चन्देलों के साथ–साथ गढ़वाली (कन्नौज) को भी पराजित कर दिया। परिणामस्वरुप परमारदीन को अपने मुँह में दाब रख कर वफादारी की कसम खानी पड़ी। चन्देलों की पूर्ण पराजय हुई और उन्हें पृथ्वीराज की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। जयचन्द इस हार से और भी चिढ़ गया और पृथ्वीराज को अपमानित करने की योजनाएँ बनाने लगा।

5. जयचंद से सम्बन्ध

जयचंद और पृथ्वरीराज मौसी के बेटे भाई थे और जयचन्द आयु मे पृथ्वीराज से बडा था। दोनों का नाना अनंगपाल दिल्ली का शासक था। अनंगपाल के कोई लड़का नहीं था अतः जयचन्द को यह आशा थी कि अनंगपाल उसे दिल्ली का शासक बनायेगा। किन्तु जब पृथ्वीराज आठ साल का था तभी अनंगपाल ने उसे गोद लेकर जयचन्द की आशाओं पर कुठाराघात कर दिया। यहीं से दोनों योद्धा एक दूसरे के विरोधी और शत्रु हो गये थे। अतः दिल्ली दोनों के आपसी वैमनस्य का पहला मूल कारण बन गया था।

जहाँ जयचन्द महत्वाकांक्षी था और उसके पास विशाल संगठित सेना थी वही पृथ्वीराज भी कम नहीं पड़ता था। पृथ्वीराज के समयकालीन फारसी ग्रन्थ 'ताजुल मासिर' में इस बात का उल्लेख मिलता है कि "पृथ्वीराज विश्व–विजय की कामना करता था।" उसी समय के हिन्दू ग्रन्थों में भी इस बात का वर्णन किया गया है कि पृथ्वीराज ने 'दल पंगुल' की उपाधि धारण की थी जिसका अभिप्राय विश्व विजय से था। पृथ्वीराज को प्रारम्भिक सफलताएँ भी मिल चुकी थीं और वह एक ख्याति प्राप्त योद्धा भी था। स्पष्ट है कि जहाँ जयचन्द अपना राज्य बढ़ाना चाहता था वहाँ पृथ्वीराज कन्नौज को जीतकर अपने राज्य में मिला लेना चाहता था। इस प्रकार पृथ्वीराज की विश्व–विजय योजना दोनों की शत्रुता का चौथा कारण बन गई थी।

इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण शत्रुता का कारण था महान् रोमांचकारी ऐतिहासिक

घटना, संयोगिता का स्वयंवर या हरण जिसने दोनो को कट्टर शत्रु बना दिया। इस स्वयंवर की लोमहर्षक घटना पर इतिहासकारों मे बडे मतभेद हैं।

6 संयोगिता हरण

भारतीय इतिहास में एक किंवदंति बहुत प्रसिद्ध है कि संयोगिता पृथ्वीराज के शौर्य पर आसक्त थी और पृथ्वीराज ने भी अपनी छाप के माध्यम से संयोगिता के मन में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया था। संयोगिता जब विवाह के योग्य हुई तो जयचन्द ने बड़ी धूम–धाम से स्वयंवर का आयोजन किया जिसमें देश–विदेश के अनेक राजा निमन्त्रित किये गये। कहते हैं पृथ्वीराज को नीचा दिखाने के लिये जयचन्द ने स्वयंवर भवन के द्वार पर पृथ्वीराज की एक मूर्ति बनवा कर रखवा दी थी। योजनाबद्ध सयोगिता ने द्वार तक जाकर पृथ्वीराज की मूर्ति को वरमाला पहना दी। पृथ्वीराज को इस घटना का पूर्व ज्ञान था। वह भेष बदल कर अपने चुने हुए वीरों के साथ कन्नौज पहुॅच गया था और ठीक समय पर संयोगिता को द्वार से उठाकर ले गया। कहते है कि जयचन्द की विशाल सेना भी पृथ्वीराज को न पकड़ सकी और स्वयंवर भवन से हरी गई संयोगिता वापस नहीं लाई जा सकी।

मुहम्मद गौरी

महमूद गजनवी के आक्रमणों ने मुसलमानों का ध्यान भारत की ओर लगा दिया। उसकी मृत्यु के बाद उसके दो लडके मुहम्मद और मसूद में उत्तराधिकार के लिये लड़ाई शुरू हो गई । मसूद ने मुहम्मद को अन्धा कर राज्य छीन लिया और फिर मुहम्मद के बेटे अहमद ने मसूद को मार डाला। फिर मसूद के बेटे मौदूद ने अहमद को पराजित कर गजनी का राज्य हड़प लिया। भाईयों की इस लड़ाई से लाभ उठाकर गौरी के सूबेदारों ने अपने आपको स्वतंत्र कर लिया। गौरी अब छोटा–सा स्वतंत्र राज्य बन गया जिसका शासक सैफुद्दीन गौरी था। इस उथल–पुथल के समय गजनी मे सत्तर वर्ष में आठ सुल्तान बदले। परिस्थिति से लाभ उठाकर दिल्ली के हिन्दू राजा ने हॉसी, थानेश्वर और सिंध मुसलमानों से छीन लिये। भारत में मुसलमानो का राज्य केवल लाहौर और उसके आस–पास के प्रदेश पर रह गया। उसी समय सैफुद्दीन गौरी के भाई अलाउद्दीन हुसैन गौरी ने गजनी पर आक्रमण कर उसे भी जीत लिया और महमूद गजनवी का अन्तिम वंशज भागकर लाहौर आ गया। उधर सैफुद्दीन के बाद

उसका चचेरा भाई शहाबुद्दीन गौरी गोर देश का शासक बना यह स्पष्ट था कि जब तक लाहौर पर गजनी वंश का आधिपत्य रहेगा तब तक गौरी वंश को सदा पराजय का भय बना रहेगा। अतः शहाबुद्दीन गौरी के लिये यह आवश्यक था कि अपनी सत्ता को स्थाई बनाने के लिये गजनी के नाम मात्र के अन्तिम सुल्तान को पराजित कर लाहौर पर भी अधिकार कर ले। शहाबुद्दीन ने 1180 ई. में खुसरो मलिक से लाहौर छीनकर गजनी के पूरे साम्राज्य पर अधिकार कर लिया। शहाबुद्दीन का पूरा नाम शहाबुद्दीन मुहम्मद गौरी था। यही आगे चलकर भारत में मुसलमान राज्य का संस्थापक बना।

पृथ्वीराज चौहान और शहाबुद्दीन गौरी में शत्रुता का कारण

सांभरपति पृथ्वीराज और गजनीपति शाहबुद्दीन गौरी में बैर भाव क्यों हुआ, इसकी भी एक रूचिकर कथा है जिसे संक्षेप में यहाँ प्रस्तुत किया जाना प्रासंगिक रहेगा –

शहाबुद्दीन गौरी की उसके कुटुम्बी भाई मीर हुसैन से अनबन हो गई। हुसैन 'शब्द भेदी' बाण चलाने वाला, वचनों का पक्का, संगीत प्रेमी, श्रेष्ठ वक्ता, भेद नीति का परीक्षक, युद्ध वीर, उदार चित्त, दानी तथा तलवार का धनी था, जिसके कारण गौरी शाह सदा उससे भय खाता था। उसकी बुद्धि और शुद्ध आचरण की प्रशंसा सभी मीर और उमराव करते थे।

गौरी शाह की एक दरबारी गायिका थी, चित्ररेखा। उसका रूप, रंग और अंग साक्षात् रति के समान थे। वह गान विद्या में निपुण थी, और कुशल वीणा वादिका बत्तीस लक्षणी, मधुर भाषिणी और सत्य वक्ता पन्द्रह वर्षीय नारी थी जो गौरी को बहुत प्रिय थी। इस स्वप्न सुन्दरी पर हुसैन मंत्र मुग्ध हो गया और चित्ररेखा भी उसे अपना हृदय दे बैठी। एक दिन शाह ने हुसैन को महिम खां और खवास खां के द्वारा उसके घर जाकर कहलवाया कि, "जो कामाग्नि से जल रहा हो, व्यभिचार हेतु इधर–उधर घूमता फिरता हो और अपने स्वामी की चहेती से प्रेम लीला रचता हो, उसका उसके स्वामी से संग्राम होना स्वाभाविक है।"

हुसैन बादशाह का यह सन्देश पाकर भी टस से मस नहीं हुआ, तब बादशाह ने क्रोधित होकर कहलवाया कि, या तो वह यहॉ से चला जाय, अन्यथा मौत के घाट

उतार दिया जायेगा। यह सुनकर हुसैन ने अपनी सैन्य टुकड़ी को सुसज्जित कर रात्रि के द्वितीय प्रहर में चित्ररेखा एवं अपनी स्त्री, पुत्रादि सहित मातृभूमि को त्याग दिया और पृथ्वीराज की शरण में भारत को प्रयाण किया।

पृथ्वीराज उस समय नागौर में था। जब उसे दूत से समाचार मिले कि हुसैन उसकी शरण में आ रहा है, तो उसने क्षत्रीय धर्म के पालनार्थ उसे शरण देने का निश्चय किया तथा अपना दरबार लगाकर मंत्री कैमास, कविचन्द, पुण्डीर प्रसंगराय पजवनराय, नरनाह कान्ह और गोविन्दराज से मंत्रणा की। पृथ्वीराज का प्रण था कि वह विधर्मी से प्रत्यक्ष बात नहीं करता था, परन्तु शरणागत का हाथ पकडकर सहारा देने और पृथ्वी पर धर्म की ध्वजा फहराने को क्षत्रीय का धर्म मानता था। अतः उसने अपने सामन्तों की राय से हुसैन को अगले दिन अपने दरबार बुलवाया, उसे ससम्मान बैठाया और आदर दिया। उसके परिवार हेतु श्रेष्ठ व्यंजनयुक्त थाल भेजे गये और राजा ने प्रीति का प्रतीक अश्व प्रदान कर मीर को सम्मानित किया।

मीर ने उस घोडे की रास अपने हाथ में लेकर अपने मस्तक पर लगाकर राजा के प्रति कृतज्ञता प्रकट की। दूसरे दिन हुसैन ने राजा को नजर की। नजर की गई वस्तुओं में पाँच भारी तरकस, जिनमें प्रत्येक में तीन–तीन सौ तीर थे, खुरासान मे बनी पाँच कमानें, सिंघली जाति का मदमस्त श्वेतवर्ण हाथी, रत्न जडित साजो से सुसज्जित पाँच ऐराकी घोड़े, एक बहुमुल्य हीरा तथा दो लालें थीं। पृथ्वीराज ने इस प्रेमोपहार को स्वीकार कर हुसैन के प्रति सहृदयता का परिचय दिया।

मो0 शाह गौरी ने आरब खॉं को पीछे से हुसैन को मनाने भेजा, परन्तु जब उसने हुसैन से वापस स्वदेश लौटने की बात की तो उसने उसे फटकार बता दी, और अरब खॉं अपना सा मुँह लेकर वापस गजनी लौट आया।

शाह ने अपना दरबार लगाया। दरबार में उच्च सिंहासन पर गौरी , तथा उसके पास सर्वोच्च काजी बैठा। ततार खॉं, आरब खॉं का बड़ा भाई मीर जमाम खॉं, कमाम खॉं, खुरासान खॉं, हाजी खॉं, तथा तीनों भाईयों समेत मान खॉं, गजनी खॉं, मुहब्बत खॉं, मीर खॉं, रूस्तम खॉं आदि भी दरबार में बुलाये गये। सभी के यथास्थान बैठने के पश्चात् गौरी ने ततार खॉं को संबधित कर कहा–

"आरब खॉं पृथ्वीराज के राज्य होकर आया है। पृथ्वीराज ने हुसैन को शरण दी है, अब जैसी आप लोगों की राय हो वैसा ही किया जाय।"

ततार खाँ ने कहा कि यह हमारे सम्मान का प्रश्न है अतः पृथ्वीराज से युद्ध करके उसे मारना ही चाहिये।

इस बात का विरोध करते हुए खुरासान खॉ ने कहा –

'धैर्यपूर्वक विचार करो, क्योंकि पृथ्वीराज चौहान सशक्त है।''

मीरों के पूछने पर आरब खॉ ने खुरासान खॉ की बात का समर्थन करते हुए बताना प्रारम्भ किया–

"चौहान का एक–एक वीर ऐसा पराक्रमी है कि जब वह अपने आराध्य का नाम लेकर भिडता है तो प्रारम्भ में वह एक दिखाई देता है, चलते समय 25, भिड़ते समय 100 और शास्त्राघात करते समय एक हजार सदृश दृष्टिगोचर होता है। उनके धड बिना मस्तक तलवार चलाते हैं। सिर कटने पर शोणित–धारा ऊपर ही जाती है। इस प्रकार ऐसे योद्धाओं का पराक्रम अद्भूत है।''

आरब खॉ की बात सुनकर ततार खाँ बोला–

"जो असमय रोते हैं, वे मरने के भय से क्यो नहीं डरेंगे ?" इस पर आरब खॉ ने कहा–"आपने उन्हें अभी देखा ही कब है ? वहाँ महामंत्री कैमास का मार्गदर्शन है। उन सामन्तों में तेज, बल, इष्ट, स्वामी धर्म में अनुरक्तता आदि अतुलनीय गुण हैं।"

शाह ने इस मंत्रणा को अनसुनाकर पृथ्वीराज से युद्ध करने का निश्चय किया और इस प्रकार इस घटना से गौरी शाह एवं पृथ्वीराज चौहान में शत्रुता उत्पन्न हुई।

''''''

पृथ्वीराज चौहान एव मुहम्मद गौरी के बीच प्रमुख युद्ध

पृथ्वीराज एवं मुहम्मद गौरी के बीच वर्षों तक अनेक युद्ध हुए, परन्तु उनमे से कुछ प्रमुख युद्ध इस प्रकार थे –

तराईन का प्रथम युद्ध 1191

मुहम्मद गौरी ने गजनी वंश के अन्तिम सुल्तान खुसरो मलिक को कैद कर गजनी भेज दिया जहाँ मुहम्मद गौरी के भतीजे बहरान ने उसे मरवा दिया। मुहम्मद गौरी उन सभी राज्यों को अपना समझता था जिन पर गजनवी के शासक एक सौ वर्ष से राज्य करने को जूझ रहे थे। उसने 1178 में पंजाब, मुल्तान और सिंध को जीत कर अपने अधीन कर लिया। पृथ्वीराज इन प्रदेशों को अपने अधीन करना चाहता था। उसने दिल्ली, हांसी, सरस्वती और सरहिन्द के किलों पर अधिकार कर लिया। गौरी ने 1189 मे पुनः सरहिन्द पर अधिकार किया और 12000 सैनिकों को मलिक जियाउद्दीन के अधीन सरहिन्द में छोड़कर लौट गया। पृथ्वीराज को जब यह पता चला कि गौरी ने सरहिन्द वापस जीत लिया है तो वह सरहिन्द के किले को पुनः जीतने के लिये आगे बढा। उसने सरहिन्द के किले मे गौरी के सूबेदार मलिक जियाउद्दीन को घेर लिया। अपने जीते हुए राज्य व सेनापति की रक्षा के लिए मुहम्मद गौरी वापस लौट कर आया।

पृथ्वीराज इस समय अनहिलवाड़ा पट्टम जीत कर लौटा था। मुसलमान आक्रमणकारियों को बाहर निकालने के लिये उसने अपने बहनोई चित्तौड़ के राजा समरसिंह से सहायता मांगी। कन्नौज के राजा जयचंद को भी निमंत्रित किया किन्तु उसने उसकी सहायता नहीं की। दिल्ली का राजा गोविन्दराज इस युद्ध में पृथ्वीराज के साथ था। पृथ्वीराज ने गोविन्दराज के पुत्र चन्द्रराज को आक्रमणकारियों का समाचार लाने भेजा। चन्द्रराज ने समाचार भेजा कि–

"गौरी ने देश को लूटा और जला दिया है, नारियों का अपमान किया और उनकी बहुत दुर्दशा कर दी है। अनेक राजपूत घराने उसके सामने नष्ट हो गये है या भाग गये हैं।''

टाड महोदय का कहना है कि पृथ्वीराज यह सुनकर बहुत दुःखी हुआ और उसने समरसिंह को गौरी का मुकाबला करने भेजा। पृथ्वीराज की सेना ने रावी के तट पर गौरी को अगे बढ़ने से रोक दिया और कई दिनों के भीषण संग्राम के बाद भी कोई परिणाम नहीं निकला।

पृथ्वीराज स्वयं आगे बढा और थानेश्वर से 14 मील दूर सरहिन्दं के किले से कुछ ही दूर आधुनिक करनाल जिले में करनाल व थानेश्वर के बीच तरावड़ी (तराईन) के मैदान में पृथ्वीराज और मुहम्मद गौरी की लडाई हुई। समरसिंह और गोविन्दराज जो चित्तौड़ व दिल्ली के राजा थे, के आक्रमणों से गौरी की सेना में भगदड मच गयी।

''''''

तराईन का दूसरा युद्ध 1192

अपनी पराजय का बदला लेने मुहम्मद गौरी एक बार फिर एक ही वर्ष बाद भारत पर चढ़ आया। पहले उसने अपने विद्रोहियो का अन्त किया और हताश न होकर युद्ध की तैयारियाँ करने लगा। इधर विजय प्राप्त करने के तत्काल बाद पृथ्वीराज ने जयचन्द को सबक देने के लिए संयोगिता का स्वयंवर भवन से हरण किया और आमोद–प्रमोद में डूब गया। मुहम्मद गौरी ने अपने दूत किवाम–उल–मुल्क को पृथ्वीराज के पास भेजा और उसे अधीनता व इस्लाम धर्म स्वीकार कर लेने के लिए पत्र लिखा। पृथ्वीराज कट्टर हिन्दू था। अतः इस्लाम स्वीकार करने का प्रश्न ही नही उठता था। उसने गौरी के अनहोने प्रस्ताव को ठुकरा दिया। गौरी एक लाख बीस हजार सैनिकों की विशाल सेना लेकर तराईन की तरफ बढ़ा, पृथ्वीराज ने अपने बहनोई व मित्र समरसिंह को फिर संदेश भेजा। समरसिंह ने चित्तौड़ का राज्य भार कर्णसिह को सौंप दिया और स्वयं पूरी तैयारी के साथ पृथ्वीराज की मदद करने आ गया। पृथ्वीराज की सेना में तीस हजार घोडे और तीन हजार हाथी थे। पैदल सेना इससे कहीं अधिक थी। भारत के कई अन्य राजाओं ने भी पृथ्वीराज की सहायता की लेकिन जयचन्द चुप बैठा रहा।

टाड महोदय के अनुसार–

कग्गार के किनारे पर दोनों ओर से सेनाओं का सामना हुआ। तीन दिन तक भीषण मारकाट हुई। तीसरे दिन समरसिंह अपने पुत्र कल्याणसिंह और तेरह हजार राजपूत सैनिकों तथा सरदारों के साथ युद्ध में मारा गया। उसकी रानी पृथा ने अपने पुत्र और पति के मारे जाने का समाचार सुना। उसने यह भी सुना कि उसका भाई पृथ्वीराज शत्रुओं के द्वारा कैद कर लिया गया है और दिल्ली चित्तौड़ के राजपूत सैनिकों और सरदारों का संहार हुआ है।

युद्ध में पृथ्वीराज पराजित हुआ और मुहम्मद गौरी दिल्ली व अजमेर का स्वामी बन गया

इन युद्धो का वर्णन हमे चन्दवरदाई के पृथ्वीराज रासो, हसन निजामी के 'ताजुलमासिर' और सिराज के 'तक्कात-ए-नासिरी' मे मिलता है। पराजित होने के बाद पृथ्वीराज के जीवन के बारे मे अनेक मतभेद हैं । कुछ विद्वान मानते है कि गौरी ने उसे अन्धा कर दिया और बन्दी बनाकर अपने साथ गोर ले गया। कुछ विद्वानों की राय है कि पृथ्वीराज को तत्काल अन्धा कर मार डाला गया। यह सत्य है कि जब प्रातःकाल राजपूत सेना नित्यकर्म में व्यस्त थी तो मुसलमानों ने अचानक उस पर हमला कर दिया। 'ताजुलमासिर' का लेखक हसन निजामी इस बात का वर्णन स्वयं करता है कि–

"जब मुहम्मद गौरी ने आक्रमण किया तो पृथ्वीराज स्वयं गहन निद्रा में सो रहा था"

युद्ध में गौरी ने चालाकी व नीति से काम लिया। उसने अपनी सेना को पाँच भागों में बाँटा और युद्ध के थोड़ी देर बाद चार भागों को पीछे भागने का आदेश दिया। पाँचवा भाग एक तरफ सुरक्षित था। जब राजपूतों ने मुसलमानों का पीछा किया तो थोड़ी दूर जाकर गौरी की सेना के चारों भागों ने रूक कर फिर आक्रमण कर दिया। अभी राजपूत सम्भले भी नहीं थे कि गौरी की सेना के पाचवें सुरक्षित भाग ने पीछे से उन पर आक्रमण कर दिया। राजपूत चारों तरफ से हताश हो गये। राजा गोविन्दराज भी युद्ध में मारा गया। पृथ्वीराज के सैनिक सामन्त उसे धायलावस्था में लेकर चले किन्तु मुसलमानों ने उसका पीछा किया और सिरसा के पास उसे बन्दी बनाकर कैदी के रुप में अजमेर तक लाया गया।

''''''

पहला दृश्य

(जंगल का-दृश्य। चारों ओर बियावान जंगल है। बीच में नदी बह रही है जिसके किनारों पर आम, जामुन व सफेदे के बड़े-बड़े पेड़ हैं। पहाड़ी ढ़लान में बकरियों का झुण्ड चर रहा है। नदी के दूसरे किनारे नटों की झोपड़ियाँ हैं जिनमें से एक बालिका निकलकर नदी की तरफ आ रही है। मंच पर उस्ताद व जमूरे का प्रवेश।)

जमूरा : उस्ताद! ये हम कहाँ आ गए?

उस्ताद : आ कहाँ गए जमूरे, बस्ती की गन्दगी से निकलकर इस खूबसूरत इलाके में आ गये। देखो चारों ओर हरियाली ही हरियाली है। पेड़ों की सुन्दर कतारें कैसी मनमोहक लग रही हैं।

जमूरा : और उस्ताद, देखो देखो वो सामने नदी की गिरती हुई धारा कैसे कल-कल करके बह रही है।

उस्ताद : अरे जमूरे।

जमूरा : हाँ उस्ताद।

उस्ताद : वो सामने कुछ देख रहा है।

जमूरा : क्या उस्ताद?

उस्ताद : अरे वो पहाड़ी ढ़लान से जो छम-छम करती उतरकर आ रही है उस लड़की को देख रहा है। तुझे पता है कौन है वो?

जमूरा : उस्ताद तुम भी बड़े चालू हो। यहाँ इतनी अच्छी जगह आकर भी कुदरत की सुन्दरता को देखने के बजाए छोकरी को देखते हो।

उस्ताद : चु...प्प। मजाक करता है।

जमूरा : अरे उस्ताद। मेरा मतलब है तुम इसे नहीं जानते, यह तो कजरी है कजरी

उस्ताद : कौन कजरी?

जमूरा : इस नटों की बस्ती के सरदार की लड़की उस्ताद। (कजरी पास में आ जाती है।)

कजरी : क्यों रे जमूरे। तू फिर आ गया तीतर पकड़ने। चल भाग यहाँ से।

उस्ताद : अरे कजरी नहीं, हम तीतर पकड़ने नहीं आये। हम तो कुदरत की इस सुन्दरता को देखने आये हैं। (नदी व पहाड़ों की तरफ इशारा करते हुए) देखो तो प्रात: काल का सूर्य कैसा सुहाना लग रहा है।

जमूरा : हाँ देखो तो झरना कैसे संगीतमय आवाज में बह रहा है।

कजरी : यहाँ कोई डर नहीं, किसी की गति में कोई अवरोध नहीं, चारों ओर शान्ति ही शान्ति है।

गाना

राग - पीलू बरवा **ताल - कहरवा**

उस्ताद : सूर्य प्रात:काल का शोभित हुआ नभ में अहा।
रक्तवर्णी रथ लिए विद्युत्गति से जा रहा॥

जमूरा : (तेज गर्जना से चौंक कर)
कैसी अनोखी गर्जना, कम्पित हुआ आकाश है।
महाकाल मर्दन को चला, क्रोधित हुआ साक्षात् है॥

कजरी : (उचक-उचक कर देखती हुई, कान लगाकर सुनती हुई)
धूल उड़ती यों लगे, ज्यों आ रहा तूफान है।
अश्व-टापों की ध्वनि! क्या आ रहा शैतान है॥

उस्ताद : (ऊँचा होकर कुछ देखता है फिर सकारात्मक नि:श्वास छोड़ता हुआ)
डर छोड़ दो निश्चित हों, देखो ध्वजा फहरा रही।
फौज यह तो जा रही है, पृथ्वीराज चौहान की॥

जमूरा : पृथ्वीराज चौहान की? कजरी – पृथ्वीराज चौहान की?

उस्ताद : हाँ हाँ......... हाँ हाँ, पृथ्वीराज चौहान की (नाचता है)

जमूरा : (उसके साथ नाचते हुए) पृथ्वीराज चौहान की, पृथ्वीराज चौहान की।

जमूरा : (रूकते हुए) लेकिन उस्ताद।

उस्ताद : हाँ जमूरे।

जमूरा : ये पृथ्वीराज चौहान कौन है?

उस्ताद : धत् तेरे की। तू पृथ्वीराज चौहान को नहीं जानता। तू जानती है कजरी पृथ्वीराज चौहान कौन है?

कजरी : मैं क्या जानूँ। मैं तो वहाँ जंगल में रहती हूँ। मेरे बापू तो मुझे शहर में ले ही नहीं जाते हैं किसी से मिलाने। फिर मैं क्या जानूँ। पृथ्वीराज चौहान कौन है?

उस्ताद : धत् तेरे की। कैसे बच्चे हो तुम लोग, अरे अपने देश के इतिहास को नहीं जानते। ऐसे प्रतापी राजा को नहीं जानते जिसके लिए राजस्थान का इतिहास गर्व से सीना ताने विश्व में अपना अस्तित्व रखता है।

जमूरा : हम तुम्हारी बड़ी-बड़ी बातों को नहीं समझ पा रहे हैं उस्ताद।

कजरी : हमें तो कुछ इस प्रकार बताओ कि हम आसानी से समझ जाएं कि पृथ्वीराज चौहान कौन है?

उस्ताद : अजय मेरू अधिपति हुए, श्री सोमेश्वश्वर नाम,
शौर्य-कीर्ति कम नहीं, जाने सब संसार।
दिल्ली के राजा हुए, अनंगपाल बलवान,
युद्ध हुआ कन्नौज से, इनका जब इस बार।
सोमेश्वर के साथ से, मिली विजयश्री आज,
क्योंकर इसको भूलते, राजा अनंगपाल।
हीरे के थे पारखी, लिया उसे अपनाया,
पुत्री कर्पूर से किया, सोमेश्वर का विवाह।
कर्पूर देवी ने दिया, पृथ्वीराज को जन्म,
दिल्ली पूरे राज्य में, चहुँ ओर आनंद।
(उस्ताद गाते-गाते एकाएक रूक जाता है।)

कजरी : रूक क्यों गये उस्ताद?

जमूरा : क्या इतना ही बताओगे इतने बड़े सम्राट के बारे में ?

कजरी : तुम तो कह रहे थे कि पृथ्वीराज चौहान ने बड़े-बड़े युद्ध जीते थे।

जमूरा : हाँ उस्ताद: यह तो बताओ कि ये युद्ध क्यों हुए और क्या इन युद्धों में किसी ने पृथ्वीराज चौहान का साथ भी दिया।

उस्ताद : (रहस्यात्मक ढंग से मुस्कराते हुए)- ठीक है, ठीक है, सब कु छ बताते हैं। तो लो सुनलो गाया पृथ्वीराज चौहान की।

(नाचता है।)

राग कलिंगडा ताल-कहरवा

आठ वर्ष का जब हुआ, बालक पृथ्वीराज,
सोमेश्वर ने दे दिया, उसको अपना राज्य।
यही शत्रुता का बना, कारण जयचन्द साथ,
पृथ्वीराज राजा बने, उसको कहा सुहाय।
उन दोनों की शत्रुता, देश हुआ बर्बाद,
मुहम्मद गौरी को मिला, इस अवसर का लाभ।
ता थै थै तत,आ थै थै तत, तत तत थै,
तत तत थै, तत तत ता------

(एकाएक रूक जाता है।)

जमूरा-कजरी : ये क्या उस्ताद। बिना पूरी बात बताये ही सम पर आ गये।

उस्ताद : क्या अब भी कुछ बाकी रह गया है ?

कजरी : अरे उस्ताद, कितना मजा आ रहा था सटोरी में।

जमूरा : सटोरी नहीं बे इस्टोरी ।

(उस्ताद उन दोनों की बात पर जार-जोर से हँसता है।)

कजरी : क्यों बे उस्ताद। ये नाटक में कौनसा नाटक करने लगे।

जमूरा : हाँ उस्ताद आगे बताओ नहीं तो हम तुम्हारे गुदगुदी करेंगे। (उस्ताद को गुदगुदी करने की उद्यत होते हैं।)

उस्ताद : हाँ भई चलो हम तुम्हें चलकर ही बता देते हैं कि पृथ्वीराज चौहान कौन है। परन्तु हम तुम्हें बता दें कि पृथ्वीराज चौहान एक पराक्रमी राजा व वीर योद्धा थे जिन्होंने शाहबुद्दीन गौरी की अगणित सेना को मार मार कर भगा दिया था

जमूरा : और शाहबुद्दीन गौरी को मार दिया होगा।

उस्ताद : अरे नहीं जमूरे। मारा नहीं रे। पृथ्वीराज चौहान वीर और पराक्रमी राजा तो थे ही, साथ में दयालु भी थे। उन्होंने शाहबुद्दीन को सत्रह बार युद्ध में बन्दी बनाया और दया करके छोड़ दिया।

कजरी : फिर तो दुम दबाकर भाग गया होगा गौरी यहाँ से।

उस्ताद : नहीं रे कजरी (निःश्वास छोड़ते हुए) गौरी पृथ्वीराज चौहान की तरह बहादुर नहीं था। कायर था, विश्वासघाती था। उसने अठारहवीं बार पृथ्वीराज चौहान को बंदी बना लिया।

जमूरा व कजरी : (पास में आ जाते हैं फिर उत्सुकता से) फिर क्या हुआ उस्ताद। आगे तो बताओ।

उस्ताद : अरे भई। तुम तो निरे मूर्ख हो कुछ भी नहीं जानते इतिहास के बारे में (कुछ सोचता हुआ) एक काम करें। वो नीचे पहाड़ी की तलहटी में नाटक दिखाया जा रहा है पृथ्वीराज चौहान, चलो वहाँ चलकर देखते हैं।

जमूरा व कजरी : (मारे खुशी के एक साथ) .... हे......! (और उछलकर उस्ताद के कंधों पर लटक जाते हैं।)

(फ्रीज दृश्य समाप्त)

****

दूसरा दृश्य

(महाराज पृथ्वीराज चौहान का दरबार लगा हुआ है जिसमें पृथ्वीराज चौहान के मित्र, कवि चन्द, ताहर, कैमास, समरविक्रम सिंह, कन्हराय आदि विराजमान हैं।)

कविचन्द : किस सोच में डूबे हैं महाराज? ऐसा कौनसा विषय है जो आपको चिन्तित किये दे रहा है?

पृथ्वीराज : हम चिन्तित नहीं है कविवर। हम तो सोच रहे हैं कि हमारे पिता श्री सोमेश्वर ने हमें अपने नाना श्री अनंगपाल के आग्रह पर उनकी राजसत्ता संभालने एवं प्रजा की सेवा करने के उद्देश्य से जो भेजा है, उसे हम पूरा कर भी पा रहे हैं या नहीं। कहीं हम उनके उन शब्दों को भूल तो नहीं गये हैं जो उन्होंने विदा देते समय हमें कहे थे।

ताहर : कौनसे शब्द महाराज?

पृथ्वीराज : विदा देते समय उन्होंने कहा था ताहर .... (सोमेश्वर की आवाज) – 'राज-शासन संभालने से पहले मेरी दो बातें याद रखना पुत्रवर। एक तो यह कि प्रजा पालन में अपने प्राणों की आहूति देकर भी प्रजा की रक्षा करना, दूसरे अपने देश की रक्षा करने में देश के शत्रु से कभी मत डरना। कभी मत डरना।' (सभी आवाज सुनकर चौंकते हैं)

पृथ्वीराज : सुना आप लोगों ने। हमारे पिता श्री का हमें दिया हुआ हौसला। हमारा फर्ज। हमारा कर्तव्य। क्या हम उसमें खरे उतरे हैं कन्हराय?

कन्हराय : हाँ महाराज। आप अपना पूरा फर्ज पूरा कर रहे हैं। हमारे दरबार के सभी योद्धा आपके एक इशारे पर देश की प्रजा की सेवा व अपने कर्तव्य के लिए अपनी जान पर खेल जाना अपना सौभाग्य समझते हैं।

(आँखें मूँदकर खुशी से) हे मेरे बहादुरों और दिलेर शेरों। आप लोगों के सामने आपकी प्रशंसा करना सूर्य को दीपक दिखाना है। यह सही है कि आप सभी ने अपनी बहादुरी व कर्तव्य निष्ठा से दिल्ली राज्य की नींव पाताल लोक तक पहुँचा दी है। मेरे बहादुर शेरों। तुम लोगों ने अपनी वीरता से चारों दिशाओं में हमारी धाक जमा दी है और युद्ध में मुहम्मद गौरी को पछाड़कर उसके अभिमान को चकनाचूर कर दिया है। वह इस कदर मुँह दबाये भागा है कि दुबारा कभी दिल्ली की ओर देखने का साहस भी न करेगा।

महाराज! यह तो आपकी बल-बुद्धि और नेतृत्त्व का ही परिणाम है कि जब-जब गौरी ने दिल्ली पर आक्रमण किया तब-तब मात खाकर भागा। परन्तु महाराज है वो अव्वल दर्जे का निर्लज्ज। बार-बार पराजित होकर भी मुँह दिखाता है और मात खाकर भी पुनः आक्रमण करने का साहस करता है। यदि बुरा न मानें तो एक बात कहूँ महाराज?

हाँ हाँ कहो कैमास।

महाराज वो इतना वाचाल है कि आपसे हर बार क्षमा मांग लेता है और आप इतने दयालु हैं कि उसे हर बार क्षमा कर देते हैं। महाराज इस शत्रु को क्षमादान देकर बार-बार क्षमा करना उचित नहीं है। हमारे हित में नहीं है। (सिर झुका लेता है)

तुम्हारा वचन सत्य है वीरवर। तुम ठीक कहते हो। परन्तु मानवधर्म यह बताता है कि बहादुर योद्धा क्षमादान से ही कीर्ति पाता है बहादुर के लिए याचक को दण्ड देना उचित नहीं। और फिर इस बार तो उसने ऐसी मात खाई है कि यदि मनुष्य होगा तो चुल्लू भर पानी में डूब मरेगा पर फिर कभी इधर मुँह उठाकर भी नहीं देखेगा।

महाराज आप दयालु हैं। धर्म के प्रतीक हैं। और वह मक्कार और नीच है। जब आप युद्ध में पराजय के बाद उसे बन्दी बनाते
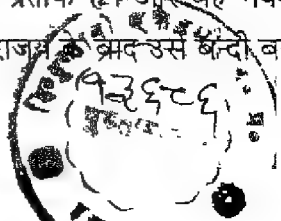
हैं तो हर बार वह सौ-सौ झूठी कसमें खाता है परन्तु फिर भी वापस आकर चढ़ाई कर देता है। और महाराज आप फिर भी उसकी रिहाई कर देते हैं। महाराज कैमास ठीक कहते हैं। गौरी अव्वल दर्जे का धूर्त और नीच प्रकृत्ति का आदमी है और ऐसे कपटी शत्रु को क्षमादान देना हमारे लिए हानि का कारण बन सकता है।

(पृथ्वीराज सुनकर हल्का-हल्का हँसता है)

समर विक्रमसिंह : महाराज। अब युद्ध तो समाप्त हो गया अत: आपकी आज्ञा हो तो मैं प्रस्थान करूँ। मुझे इजाजत है?

पृथ्वीराज : रावजी। कुछ दिन और ठहर जाइए। अभी तो युद्ध से छुटकारा मिला है। कुछ बैठकर वार्तालाप करने का अवसर तो अभी आया है।

द्वारपाल : (प्रवेश करके) - महाराज की जय हो। महाराज कन्नौज से एक राजदूत आवश्यक सन्देशा लाया है। आज्ञा हो तो आपके समक्ष पेश किया जाए।

पृथ्वीराज : उसे आदर सहित हमारे सम्मुख पेश करो द्वारपाल। (द्वारपाल चला जाता है) (पृथ्वीराज समरविक्रमसिंह की ओर मुखातिब होकर) -न जाने कन्नौज से कैसी खबर आई है रावजी।

समरविक्रमसिंह : महाराज मुझे तो आसार कुछ अच्छे नजर नहीं आ रहे हैं।

दूत : (प्रविष्ट होकर - झुककर अभिवादन करते हुए)-महाराज! अपने श्रीचरणों में दास का प्रणाम स्वीकार करें।

पृथ्वीराज : हमारे दरबार में तुम्हारा स्वागत है दूतवर। पहले कन्नौज राज्य की कुशलता बयान करो और फिर अपने यहाँ आने का प्रयोजन बखान करो।

दूत : महाराज भगवान की दया और आपकी शुभकामनाओं से कन्नौज में सब कुशल मंगल हैं और यह सेवक आपकी सेवा में महाराज जयचन्द द्वारा रचाये जाने वाले राजसूय यज्ञ में पधारने का साग्रह निमंत्रण पत्र लेकर हाजिर हुआ है।

(उत्तेजित होकर) दूतवर! क्या तुम जो कह रहे हो अपने होश और हवास में कह रहे हो। क्या जयचन्द ने जो संदेशा भिजवाया है वह उसके शांत चित्त की उपज है। क्या वाकई जयचन्द ने राजसूय यज्ञ करने का निश्चय किया है?

(शांत स्वर में विनम्र होकर) –क्षमा करें महाराज! मेरे स्वामी ने अपने बल,बुद्धि व पराक्रम में अपने आपको सन्तुष्ट पाकर ही यह शुभकार्य करने का निश्चय किया है। अतः मेरा आपसे निवेदन है कि आप शांत चित्त व विवेक से निर्णय करते हुए इस निमंत्रण को स्वीकार करें।

(आवेश में) –दूतवर! तुम्हारे महाराज को अपने बल–बुद्धि व पराक्रम से सन्तुष्टि का भ्रम हुआ है।

(व्यंग्य से) –परन्तु आपको इस बात का भ्रम कैसे हुआ कविवर? यदि उन्हें भ्रम नहीं होता दूतवर! तो वे ऐसा अविवेकशील निर्णय लेते ही नहीं। उन्होंने अपनी शक्ति का अनुचित आकलन कर व्यर्थ में एक कठिन समस्या अपने सिर पर ले ली है। भाई जरा सोचो तो राजसूय यज्ञ करना कहीं ग्वाल–बालों का खेल है? द्वापर युग के अन्त में जब महाराज युधिष्ठर ने यह यज्ञ रचाया था तो भगवान श्री कृष्ण के सहारे से सफल हो पाये थे। उसके बाद किसी ने राजसूय यज्ञ कराने की सोचने तक की हिम्मत नहीं की। महाराज जयचन्द शायद पिछले युद्ध में हुए घावों एवं मार को भूल गये जो राजसूय यज्ञ कराने की ठानी है।

: (बीच में टोकते हुए) –कविराज क्षमा करें। परन्तु दूत के साथ ऐसी बातें करना नीति–विरुद्ध है।

तुम कविराज की बातों पर मत जाना दूतवर। ये तो कविराज का स्वभाव है कि जो भी बुरी बात मन में आयी तो बुरा ही बुरा सोचकर निर्भय होकर कह दिया और कहीं अच्छाई दिखी तो उसका अच्छा एवं अलौकिक वर्णन कर दिया। इसलिए कवि चन्द हमारे दरबार की अमूल्य निधि है। (प्रवाह में कहता है फिर एकाएक पलटकर)

आप जयचन्द को मरी ओर से निमत्रण हेतु धन्यवाद देना और कहना कि हमारा यवनों के साथ युद्ध ठना हुआ है अत: इस शुभअवसर पर उपस्थित न हो सकेंगे।

(फिर मंत्री से) -मंत्री जी! दूत महाशय इतनी लम्बी यात्रा करके आए हैं, थक गए होंगे अत: इनको विश्राम गृह ले जाइये और अतिथि सत्कार की व्यवस्थाएं कीजिए।

दूत : (विनम्रता व उत्तेजना के साथ) -क्षमा करें महाराज! परन्तु यदि आप हमारे महाराज का निमंत्रण स्वीकार नहीं करेंगे तो मैं भी आपकी नगरी में अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा और अपने महाराज की आज्ञानुसार अभी यहाँ से प्रस्थान करूँगा। (दूत का प्रस्थान)

चामुण्डराय : महाराज! मुझे तो इस बात का आश्चर्य है कि कन्नौज नरेश को ये राजसूय यज्ञ कराने का भूत कैसे सवार हुआ।

पृथ्वीराज : खैर! कन्नौज नरेश ने जो भी किया वे उसे स्वयं भुगतेंगे। परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि उनका दूत कविराज की बातों को बढ़ा चढ़ाकर जयचन्द को बतायेगा। मुझे उस दूत के विचार अच्छे नहीं लगे। इसलिए कुछ ऐसी व्यवस्था की जाय जिससे कन्नौज में होने वाली समस्त घटनाओं का आसानी से पता लगता रहे।

द्वारपाल : (प्रवेश करके) -महाराज की जय हो। महाराज द्वार पर एक नवयुवक आपसे मिलने की जिद कर रहा है।

पृथ्वीराज : (कुछ सोचते हुए) द्वारपाल, कौन है वह नवयुवक। कहाँ से आया है और हमसे क्यों मिलना चाहता है?

द्वारपाल : महाराज। वह न तो अपना नाम-पता बताता है ओर न ही आपसे मिलने का प्रयोजन बताना चाहता है। बस, तुरन्त आपसे मिलना चाहता है।

(सभी दरबारी सोच में पड़ जाते हैं।)

पृथ्वीराज : (उत्सुकता में डूबे हुए) -अच्छा द्वारपाल, जाओ और उसे ससम्मान हमारे पास लेकर आओ।

(द्वारपाल का प्रस्थान और नवयुवक के साथ पुन: प्रवेश।)

नवयुवक : (प्रविष्ट होकर झुक कर अभिवादन करते हुए) –महाराज दास का प्रणाम स्वीकार करें।

पृथ्वीराज : आपका स्वागत है वीरवर। कहो आपका क्या नाम है, कहाँ से आये हो और किस प्रयोजन से यहाँ तक आने का कष्ट किया है?

नवयुवक : महाराज इस दास का नाम जोधमल है और कन्नौज से आपके नाम एक गुप्त सन्देश लेकर आया है। (फिर सभी की ओर सन्देहास्पद दृष्टि से देखते हुए महाराज को सम्बोधित करते हुए) –आपकी आज्ञा हो तो सन्देशा आपको दूँ।

पृथ्वीराज : आप चिन्ता न करें जोधमल जी। ये सब तो मेरे विश्वस्त एवं अन्तरंग मित्र हैं अतः आप कोई ड़र मन में न रखें और सन्देशा हमें दें।

(जोधमल पत्र पृथ्वीराज को देता है)

पृथ्वीराज : (पत्र मंत्री को देते हुए) –मंत्री जी, जरा पढ़कर तो सुनाइये, इसमें कौनसा संदेश है।

मंत्री : (पत्र लेता हुआ) –जो आज्ञा महाराज (पत्र पढ़ता है) –
सेवामें,

हे क्षत्रिय कुलभूषण, वीर शिरोमणी दिल्ली नरेश!

अपने चरणों में इस निर्बल, असहाय अवला का प्रणाम स्वीकार करें।

हे पृथ्वीपति! आपको शायद पता लग गया होगा कि मेरे अभिमानी पिता ने राजसूय यज्ञ कराने का निर्णय कर लिया है। इसके साथ ही मेरे विवाह का स्वयंवर भी किया जाना तय है। मैं जानती हूँ कि आप अपने अपमान का ख्याल रखते हुए स्वयंवर में भी नहीं आना चाहेंगे। परन्तु नाथ! इस समय मेरा जीवन मंझधार में है जिसे आप ही बचा सकते हैं। मैंने आपको मन से अपना आराध्य देव मान लिया है और आपके सिवा अन्य किसी का पति रूप में वरण कभी न करूँगी। इसलिए मैंने प्रण किया है कि यदि आपने मुझ दासी को स्वीकार नहीं किया तो मैं

अपना जीवन समाप्त कर लूगी अत हे प्राणेश यह जीवन अब आपके हाथ है, चाहें तो इसे बचा लें, चाहें तो मिटा दें।

आपकी अभागिनी दासी
संयोगिता

पृथ्वीराज : (नि:श्वास छोड़ते हुए) –आप हारे थके आये हैं जोधमल जी, अत: थोड़ा विश्राम करके जलपान कर लें।

जोधमल : क्षमा करें महाराज! मुझे तुरन्त पत्र का उत्तर लिख दीजिए अन्यथा मेरे विलम्ब के कारण कन्नौज में बहुत बड़ा अनिष्ट हो जायेगा। (मंत्री पृथ्वीराज के पास उत्तर लिखा पत्र लाता है जिस पर पृथ्वीराज अपने हस्ताक्षर करते हैं।)

पृथ्वीराज : (पत्र जोधमल को देते हुए) –ठीक है जोधमल जी! ये पत्र का उत्तर लीजिए और ये पुरस्कार आपके लिए।

जोधमल : (पुरस्कार लेने से इन्कार करते हुए) –पुरस्कार के लिए क्षमा करें महाराज! मैं एक क्षत्रिय हूँ और पुरस्कार लेकर क्षात्र धर्म को कलंकित नहीं करूँगा।

(पत्र लेकर सिर झुकाकर प्रस्थान करता है)

पृथ्वीराज : वीर कैमास! आप तुरन्त एक सेना की टुकड़ी तैयार कीजिए। हम कल ही कन्नौज के लिए प्रस्थान करेंगे।

कैमास : जैसा हुक्म महाराज! (शीश झुकाकर प्रस्थान करता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

तीसरा दृश्य

स्टेज पर उस्ताद, जमूरे व कजरी का प्रवेश)

कहो बच्चों! नाटक कैसा लग रहा है?

नाटक तो अच्छा लग रहा है उस्ताद, लेकिन.........

लेकिन क्या भई, बताओ तो क्या कुछ कमी लग रही है नाटक में?

कमी! कोई कमी तो नहीं लग रही है उस्ताद। पर कुछ धूम धड़ाका नहीं हो रहा है।

हाँ उस्ताद, आप तो कह रहे थे कि पृथ्वीराज चौहान ने युद्ध मे दुश्मनों को मार-मार कर भगा दिया था।

और यहाँ तो केवल दरबार ही लग रहा है।

अरे भई, सब कुछ एक साथ थोड़े ही हो जायेगा। थोड़ी तसल्ली रखो, अभी युद्ध भी बतायेंगे। हम तुम्हें राजा जयचन्द के दरबार में कन्नौज ले चलते हैं।

लेकिन उस्ताद, मैं तो अपनी अम्मा से पूछकर ही नहीं आया। और मेरी अम्मा तो मुझे इतनी दूर भेजेगी ही नहीं।

अरे अक्ल के दुश्मनों! हम तुम्हें सचमुच कन्नौज थोड़े ही ले जा रहे हैं। मेरा मतलब है नाटक में अब हम राजा जयचन्द का दरबार देखेंगे।

फिर वही दरबार उस्ताद। फिर गये न जुबान से। तुम तो कह रहे थे युद्ध बतायेंगे।

अरे भई तुम देखो तो। इस दरबार से ही युद्ध की शुरूआत हो जायेगी।

(खुशी से) हे......हे........(और उछलकर उस्ताद के कंधों से लटक जाते हैं। उस्ताद गिर पड़ता है)

काश धीरे-धीरे मंद होता हुआ बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

चौथा दृश्य

(कन्नौज में संयोगिता स्वयंवर का दृश्य। मंडप सजा हुआ है। विभिन्न प्रान्तों के राजा–महाराजा और वीर योद्धा बड़े-बड़े आसनों पर विराजमान हैं। राजा जयचन्द मुख्य स्थान पर बैठे हैं। मंडप के एक कोने में चारण–भाट वीरों का गुणगान कर रहे हैं। संयोगिता बुझे मन से एवं व्यथित होकर हाथों मे जयमाला लिए इधर–उधर चक्कर लगा रही है। साथ में राज भट्ट संयोगिता को हर वीर के बारे में गाकर बता रहा है।)

संयोगिता : (राजभट्ट से) –हे राजभट्ट। मैं इस स्वयंवर मंड़प में चारों ओर चक्कर लगा आई परन्तु इस प्रतिमा में जो ओज एवं तेज मुझे देखने को मिला है उससे मैं प्रभावित हूँ।

राजभट्ट : (आँखें चुराते हुए) – यह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति की प्रतिमा नहीं है राजकुमारी जी। आप इसका ध्यान छोड़ें और स्वयवंर में उपस्थित बड़े–बड़े योद्धाओं की ओर चलें।

जयचन्द : (अट्टहास करता हुआ) – तुम्हारा ध्यान भटक गया है पुत्री।

संयोगिता : नहीं पिता श्री नहीं। मेरे ध्यान का निर्णय मुझ पर छोड़ दीजिए। (फिर भाट से) – हे राजभट्ट। मेरे ख्याल से ये कोई साधारण वीर नहीं है अतः इनके बारे में मुझे जान लेने दीजिए। आप तो केवल इस वीर की वंशावली और बहादुरी का वर्णन मात्र बखान कीजिए।

राजभट्ट : (जयचन्द के डर से सहमते हुए) – ठीक है कुमारी जी, आप नहीं मानती हैं तो सुनिए :–

राग–पीलू बरवा **ताल–कहरवा**

राजपूत अजमेर के श्री सोमेश्वर नाम।
उनके ही ये पुत्र हैं, पृथ्वीराज चौहान॥
आन बान इनकी बड़ी शेरों की सन्तान।

चोहानो के वश का चमकाया है नाम॥
गौरी को जीवन दिया, माफ किया हर बार।
धन- धन इनकी कीर्ति, दुश्मन से व्यवहार॥

· (पृथ्वीराज की प्रतिमा को जयमाला पहनाते हुए) - हे हृदयेश्वर। इस अनुचरी को अपने चरणों की दासी स्वीकार कर उद्धार कीजिए।
(संयोगिता के इस साहस से अवाक् रह जाता है। फिर एकाएक क्रोध से) - मूर्ख लड़की! यह तूने क्या किया? क्या तेरा विवेक नष्ट हो गया है? क्या तू अपने कुल और उसकी मर्यादा को बिलकुल भूल गई है? तू यह भी भूल गई है कि यह तो एक ऐसे कायर की प्रतिमा है जो हमारे द्वारपाल के काबिल है (फिर नम्रता से) तूने भूल की है पुत्री। खैर कोई बात नहीं अब तुम इस द्वारपाल की प्रतिमा से माला निकालो और किसी अन्य श्रेष्ठ वीर का पति-रूप में वरण करो।

: आपका यह उपक्रम सफल हुआ पिता श्री। यही द्वारपाल अब मेरे जीवन का रखवाला है। यही पत्थर की मूर्ति आपके इन समस्त शूरवीरों में श्रेष्ठ है। किसी प्रकार के भ्रम ने मुझे विचलित नहीं किया पिताश्री। मैंने इनका पति रूप में वरण कर आपका मान बढ़ाया है।

: (क्रोध में मुट्ठियाँ भींचता हुआ बीच में बात काटते हुए) - मूर्ख और बद्तमीज लड़की। मैं नहीं जानता था कि तू आस्तीन का साँप निकलेगी। तू हमारे ही सामने हमारे सबसे बड़े दुश्मन की प्रशंसा कर रही है। तू हमारी पुत्री है अतः हम लाचार हैं तुझे अब तक जिन्दा रखने के लिए। तेरी जगह यदि और कोई होता तो अब तक उसका सिर धड़ से अलग हो चुका होता। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। आखिरी बार कह रहा हूं। जा और यह माला इस द्वारपाल की प्रतिमा से निकाल ले अन्यथा मैं अपने ही हाथों से आज तेरा वध कर दूँगा।

· (एकाएक बीच में आते हुए जयचन्द से) - इसे माफ कर दें महाराज। यह तो एक अबोध बालिका है। परन्तु इसने जो कुछ

भी किया है उससे पीछे न हटेगी। मैं इसे जन्म से जानती हूँ। (संयोगिता धाय माँ के पास आ जाती है और धाय माँ उसे अपने से सटा लेती है।)

जयचन्द : (क्रोध में धाय से) – चुप कर बुढ़िया। तू यदि इसकी धाय न होती हो इससे पहले मैं तेरा वध कर देता। तू इसे समझाने की बजाय हमें ही नसीहत दे रही है।

धाय : क्षमा करें महाराज। आप धन्य हैं जिसने संयोगिता जैसी पतिव्रता भाव रखने वाली पुत्री को जन्म दिया और धन्य है संयोगिता जो धीर–गम्भीर वीर शिरोमणि पृथ्वीराज चौहान का पतिरूप में वरण करती है महाराज। और यह आप जैसे विद्वान और बहादुर राजा के योग्य नहीं कि अपनी पुत्री को शास्त्र और नीति के विरुद्ध आचरण को प्रेरित करें।

जयचन्द : (क्रोध से) – चुप कर बे चाण्डाल। तू अपनी हद को पार कर रही है। तू हमारी दासी होकर हमसे जुबान लड़ाने की हिम्मत कर रही है। (फिर क्रोध से) सैनिकों बन्दी बना लो इसे।

संयोगिता : (बीच में आते हुए) खबरदार जो किसी ने धाय माँ को हाथ लगाया (फिर जयचन्द से) – क्षमा करें पिता श्री। परन्तु एक अबला पर हाथ उठाना और अत्याचार करना नीति–विरुद्ध है।

जयचन्द : (कुछ ढ़िलाई से) – हे पुत्री! तू अभी नादान है और अपना भला–बुरा सोचने में सक्षम नहीं है। मैं जो भी करना चाहता हूँ वह तुम्हारे हित में ही होगा। तुम नहीं जानती कि पृथ्वीराज हमारा बहुत बड़ा शत्रु है और कोई बहादुर नहीं बल्कि कायरों का कायर है और तूने जिसे जयमाला पहनाई वह कोई इन्सान न होकर केवल एक पत्थर की प्रतिमा मात्र है। मैं तुझे एक मौका और देता हूँ पुत्री सोचने का (और आदेश में बाहर निकल जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

पाँचवां दृश्य

(पृथ्वीराज चौहान को दरबार लगा हुआ है। पृथ्वीराज अपने सामन्तों से राज्य-व्यवस्था के बारे में मंत्रणा कर रहे हैं। सहसा दरबार में एक गुप्तचर का प्रवेश।)

गुप्तचर : (पृथ्वीराज सहित सभी सामन्तों का अभिवादन करते हुए)- महाराज की जय हो।

पृथ्वीराज : (उत्सुकता से)- कहो गुप्तचर क्या समाचार लाये हो ?

गुप्तचर : (शीघ्रता से)- महाराज आपको तो पता ही है कि पंगुराज जयचन्द राठौड़ ने अपनी पुत्री का स्वयंवर करने का निश्चय किया था।

पृथ्वीराज : (सभी सामन्तों की ओर मुखातिब होते हुए)- हाँ भई। एक दूत से हमें यह सूचना मिली थी और इसीलिए हमने तुम्हें आगे की गतिविधियों की सूचना एकत्र कर सूचित करने को कहा था। हम इस बात से आश्वस्त होना चाहते थे कि संयोगिता अपने द्वारा भेजे गये पत्र के अनुसार हमें पतिरूप में प्राप्त करने के लिए क्या कार्यवाही करती है।

गुप्तचर : महाराज पंगुराज जयचन्द ने स्वयंवर में आमंत्रित राजाओं में से किसी एक का वरण करने हेतु राजकुमारी के हाथ में वरमाला थमा दी। कविराज देव ने राजकुमारी के आगे चलते हुए प्रत्येक राजा के कुल वैभव एवं व्यक्तित्व का बखान किया, परन्तु उन्होंने उनमें से किसी के भी गले में वरमाला नहीं डाली।

कन्हराय : फिर क्या हुआ गुप्तचर, आगे बताओ।

गुप्तचर : (कुछ रूकते हुए पृथ्वीराज से)- क्षमा करें महाराज। राजा जयचन्द ने आपका अपमान करने के उद्देश्य से स्वयंवर-स्थल के द्वार पर द्वारपाल के रूप में आपकी प्रतिमा स्थापित कर दी थी।

चामुण्डराय : (क्रोधित हो गुप्तचर की बात काटते हुए म्यान में से तलवार निकालकर)– उस दुष्ट की यह हिम्मत ?

पृथ्वीराज : शान्त हो वीर शान्त हो। हमें गुप्तचर की पूरी बात सुनकर ही कोई उचित निर्णय लेना चाहिए।

धीर पुण्डीर : (गुप्तचर से)– हाँ कहो गुप्तचर आगे की बात कहो।

गुप्तचर : महाराज राजकुमारी जी ने आपकी प्रतिमा के बारे में कवि से जानकारी ली और तुरन्त आपके गले में वरमाला डालकर चरण स्पर्श किये।

पृथ्वीराज : (खुश होते हुए)– फिर क्या हुआ गुप्तचर। राजा जयचन्द की क्या प्रतिक्रिया रही ?

गुप्तचर : महाराज राजा जयचन्द ने राजकुमारी जी को प्रेम से समझाया कि उसका निर्णय गलत है और वह आपके अतिरिक्त अन्य किसी राजा का पतिरूप में वरण कर ले। उसने राजकुमारी जी को जान से मारने की धमकी भी दी परन्तु वे अपने निर्णय पर फिर भी अटल रहीं महाराज, और आपको पति मानकर अपने आततायी पिता के पास मृत्यु के साये में आपका इन्तजार कर रही हैं। (गुप्तचर शीश झुकाकर बाहर प्रस्थान करता है।)

पृथ्वीराज : (सभी सामन्तों से)– यह तो हमारे लिए शीघ्र विचारणीय प्रश्न है सामन्तगण।

पजवनराय : हाँ महाराज यह प्रश्न संयोगिता की विवशता का नहीं है अपितु आपकी आन–बान और शान का प्रश्न है महाराज, अतः हमें शीघ्र कोई उचित कार्यवाही करनी चाहिए।

कन्हराय : पजवन राय ठीक ही कहते हैं राजन्। आप विवेकशील हैं, अतः उचित कदम उठाकर कन्या के सौभाग्य की कामना कीजिये।

पृथ्वीराज : (कविचन्द से)– आपका क्या विचार है कविराज ?

कविचन्द : महाराज हमारे सभी सामन्तों का विचार प्रशंसा योग्य एवं अवसर के अनुकूल है। मैं वहाँ जाने के विपक्ष में नहीं हूँ परन्तु

महाराज आप तो जयचन्द को भली भाँति जानते हैं। यह वही जयचन्द है जिसने आपके क्षेत्र को विचलित कर रखा है महाराज, इसलिए उसके नगर की ओर उचित विचार करके चलना ही श्रेयस्कर रहेगा।

पृथ्वीराज : (कुछ देर तक आँखें मूंदकर सोचते हुए) आप सभी सामन्तों से विचार विमर्श करने के पश्चात् इस विषय में हम यही करना ठीक समझते हैं कि कवि चन्द को एक राज्य कवि के से सम्पूर्ण आभूषण पहनाये जायं और हम स्वयं कवि के सहायक बनकर कन्नौज को प्रस्थान करें।

परमार जैत्र : क्षमा करें महाराज, परन्तु हमारी राय में आप विरोचित वेश धारण कर सेना सहित प्रस्थान करें।

गोविन्दराय चौहान : परमार जैत्र ठीक कहते हैं महाराज । आप और कविराज का छद्मवेश में अकेले वहाँ पर जाना ठीक नहीं, अतः आप सेना लेकर ही प्रस्थान करें।

पृथ्वीराज : (विचार करते हुए)– ठीक है, हम अपने सौ सामन्तों और छः शूरमाओं को लेकर कन्नौज राज्य को प्रस्थान करेंगे, परन्तु इस सम्बन्ध में हम गुरू रामपुरोहित से मुहूर्त पूछना आवश्यक समझते हैं।

कन्हराय : (दूत से)– जाओ गुरू राम पुरोहित अभी महल में ही हैं, उन्हें महाराज का संदेश दो।

(दूत गुरू राम पुरोहित को संदेश देने बाहर चला जाता है। दरबार में खुसर फुसर होती रहती है। कुछ ही देर बाद गुरू राम पुरोहित के दरबार में उपस्थित होते ही महाराज पृथ्वीराज चौहान सिंहासन से उठकर गुरू का अभिवाद करते हैं।)

पृथ्वीराज : गुरूदेव प्रणाम।

गुरू राम पुरोहित : आयुष्मान भवः। कहिए राजन् क्या शुभ समाचार हैं। (गुरू के आसन पर बैठने के साथ ही सभी सभासद अपने-अपने स्थान पर विराजमान हो जाते हैं।)

धीर पुण्डार गुरूदेव आपको तो पता ही है कि कन्नौज नरेश ने अपनी पुत्री सयोगिता का स्वयवर रचा था राजकुमारी ने इस स्वयवर में हमारे महाराज की प्रतिमा के गले में वरमाला पहना दी, जिससे क्रुद्ध होकर जयचन्द अपनी पुत्री को मारने को तैयार है, परन्तु राजकुमारी अपने निश्चय पर अभी भी अडिग हैं।

कन्हराय : और सभी सामन्तों की राय से कुछ सामन्त-सैनिकों के साथ संयोगिता को लाने महाराजा कविचन्द के साथ कन्नौज जाना चाहते हैं।

पृथ्वीराज : इसलिए गुरूदेव आप हमें उचित शुभी मुहूर्त में कन्नौज पर चढ़ाई करने का आशीर्वाद दें।

गुरू राम पुरोहित: (पंचांग में मुहूर्त देखकर कुछ विचार करते हुए)- आपका निर्णय न्याय संगत एवं नीति सम्मत है राजन्। मेरे विचार में रविवार का दिन कन्नौज पर चढ़ाई करने के लिये उपयुक्त है। इस समय सूर्य पवित्र स्थान पर है। चन्द्रमा 10 वें स्थान को छोड़कर ग्यारहवें में आ जायेगा । राजन् आपकी राशि में श्रेष्ठ मंगल है। पाँचवें स्थान पर जो ग्रह है वह मुसलमानों के लिए उत्तम है तथा राहू सामन्तों के लिए हानिकारक है, अत: हे राजन् मेरी राय में रविवार से पूर्व कन्नौज के लिए प्रस्थान करना उचित नहीं होगा।

पृथ्वीराज : (ठहाका लगाते हुए)- गरूदेव आप की सलाह निश्चय ही हमारे हित में है। परन्तु संयोगिता स्वयंवर की इस घटना के कारण इस विषय में रविवार तक इन्तजार करना राजकुमारी संयोगिता के लिए अमंगलकारी हो सकता है।

धीर पुण्डीर एवं
चामुण्डराय : महाराज ठीक ही कह रहे हैं गुरूदेव।

पृथ्वीराज : (कविचन्द से)- कविवर आप शीघ्र जाकर राज्यकवि का वेश धारण करें और मैं आपके साहयक का बाना पहनकर सामन्त शूरमाओं के साथ कन्नौज की ओर प्रस्थान करते हैं।

गुरू राम पुरोहित ठीक है राजन्, शायद विधाता को यही मजूर है आप कन्नोज की ओर अवश्य प्रस्थान करें, मेरा आशीर्वाद आपके साथ है।
(कविचन्द का बाहर प्रस्थान। पृथ्वीराज गुरू राम पुरोहित से आशीर्वाद लेते हैं और दरबार से बाहर प्रस्थान करते हैं। प्रकाश जाते हुए पृथ्वीराज पर मंद-मंद गति से गिरता हुआ बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

छठा दृश्य

(पंगुराज जयचन्द का दरबार लगा हुआ है। राजा जयचन्द संयोगिता स्वयंवर की घटना से काफी चिन्तित अवस्था में अपने सामन्तों के साथ मंत्रणा करने में मशगूल हैं। सहसा एक दूत का प्रवेश।)

दूत : (प्रविष्ट होते हुए)- महाराज की जय हो।

जयचन्द : कहो दूत क्या बात है ?

दूत : महाराज। द्वार पर एक कवि जो दिल्ली के वैभव से युक्त है, आपके दर्शन करने की आज्ञा चाहता है।

जयचन्द : (सामन्तों की ओर मुखातिब होकर)- दिल्ली राज्य का कवि और हमसे मिलना चाहता है। क्या प्रयोजन हो सकता है इसका।

(फिर दूत से)-क्या वह अकेला ही आया है दूतवर ?

दूत : नहीं महाराज। इस कवि के साथ में दिल्ली राज्य की प्रतिष्ठा के अनुरूप अंगरक्षक और एक सहायक भी है। परन्तु वह केवल अपने सहायक को साथ लेकर आपसे मिलना चाहता है।

जयचन्द : (कुछ विचार करते हुए)- ठीक है दूतवर उन्हें सम्मान हमारे दरबार में लेकर आओ।

(दूत का बाहर प्रस्थान और कविचन्द एवं उसके सहायक को लेकर पुनः आगमन एवं महाराज के इशारे से बाहर प्रस्थान)

कविचन्द : (प्रवेश करके)- महाराज दिल्ली राज्य के इस कवि की ओर से प्रणाम स्वीकार करें।

(सहायक बने पृथ्वीराज कविचन्द के साथ सामान्य भाव से खड़े हैं परन्तु जयचन्द को झुककर प्रणाम नहीं करते।)

जयचन्द : आइये कविराज हमारी राजधानी में आपका स्वागत है।

(जयचन्द के इशारे पर आसन पर बैठते हुए)- महाराज मैं देशाटन पर निकला हूँ। आपकी कीर्ति और महिमा सुनकर एक याचक के रूप में आपके दरबार में उपस्थित हुआ हूँ।
यदि बुरा न मानें तो एक बात पूछूं कविराज ?
(सचेत होते हुए)- हाँ हाँ पूछिए वीरवर। आप महाराज जयचन्द के सामन्त हैं अतः मुझसे कोई भी प्रश्न कर सकते हैं।
आपने दिल्ली एवं दिल्लीश्वर को क्यों छोड़ दिया।
मैंने न तो दिल्ली छोड़ी है और न ही दिल्लीश्वर की सेवा। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि मैं देशाटन पर निकला हूँ और महाराज जयचन्द की महिमा सुनकर ही उनके दर्शनार्थ यहाँ पर उपस्थित हुआ हूँ।

पगुराज जयचन्द की, महिमा बड़ी अपार,
न्यायप्रिय योद्धा बड़े, जाने सब संसार।
दिल्लीश्वर से कम नहीं, कीर्ति राज जयचन्द,
दर्शन करके आपके, यह कवि हुआ प्रसन्न।

(कविचन्द सहायक बने पृथ्वीराज को आँखों में चुप रहने का संकेत करता है जिससे जयचन्द की प्रशंसा में कहे गये श्लोक के कारण क्रोधित पृथ्वीराज अपने आपको संयत कर लेते हैं।)
(अपनी प्रशंसा सुनकर)- वाह कविराज वाह। वाकई आप दिल्ली राज्य के एक योग्य कवि हैं।
(फिर रायसेन से)- रायसेन जी हमारे यहाँ की परम्परा के अनुसार हमारी रानियों की ओर से कर्णाटकी दासी के हाथो कविराज के सम्मान में तांबूल भेजा जाय। (रायसेन जो हुक्म कहकर बाहर प्रस्थान करता है।)
कर्णाटकी दासी ?
हाँ कविवर कर्णाटकी दासी। यह दिल्ली राज्य की वही कर्णाटकी दासी है जो मंत्री कैमास की हत्या के बाद भागकर हमारे महाराज की शरण में आ गई थी।

रायसेन : (उपस्थित होत हुए)- और उसने महाराज जयचन्द से यह आज्ञा प्राप्त कर ली है कि वह दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान के अतिरिक्त किसी अन्य से घूंघट नहीं करेगी और हमेशा खुले मुँह रहेगी।

(सहसा ताम्बूल लेकर कर्नाटकी दासी का प्रवेश। जब वह उपस्थित हुई तो एकाएक कविचन्द के सहयोगी बने पृथ्वीराज को सामने देखकर अपना घूंघट खींच लेती है, परन्तु फिर तुरन्त ही स्थिति को संभालती है।)

कर्णाटकी दासी : (राजा जयचन्द से)- क्षमा करें महाराज। सम्राट पृथ्वीराज चौहान जिस कवि का गुरूतुल्य सम्मान करते हैं उनके प्रति सम्मान प्रकट करना और घूंघट निकालना मेरा धर्म है।

जयचन्द : (हंसते हुए)- ठीक है, ठीक है।

(फिर वीर सहदेव से)- वीर सहदेव।

वीर सहदेव : जी महाराज।

जयचन्द : कविराज को उनकी प्रतिष्ठा के अनुकूल सुसज्जित महल में ठहराया जाय।

(फिर कविचन्द से)- कविराज आप हारे थके आए हैं अतः जाकर विश्राम करें और कल दरबार में आकर निःसंकोच जो माँगना हो मांगे। दिल्लीश्वर के कवि को राजा जयचन्द मनवांछित दान देगा। हा हा हा हा (कविचन्द सहायक बने पृथ्वीराज के साथ धीरे-धीरे प्रस्थान करता है। प्रकाश उन पर मंद-मंद स्थिर होते हुए बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

सांतवां दृश्य

(जयचन्द के महल का दृश्य। जयचन्द अपने सामन्तों, रायसल्ल राठौड़, वीर सहदेव आदि के साथ संयोगिता को समझाने आया है। पास में ही धाय माँ खड़ी है।)

. (संयोगिता से)- अब तुम्हारा चित्त कैसा है बेटी। अभी स्वयंवर में पधारे सभी योद्धा रुके हुए हैं अतः शान्त चित्त से निर्णय करके उनमें से किसी का भी अपनी इच्छानुसार पतिरूप मे वरणकर स्वयंवर की रस्म को पूरी करो।

: क्षमा करें पिता श्री। स्वयंवर की रस्म तो उसी दिन पूरी हो गई थी जिस दिन मैंने दिल्लीश्वर सम्राट पृथ्वीराज चौहान का अपने पति के रूप में वरण किया था। और आप यह भी जानतें हैं कि एक क्षत्राणी अपने जीवन में एक ही बार किसी को अपना पति स्वीकार करती है। अब वही मेरे लिए साक्षात् भगवान हैं।

: (व्यंग्य से अट्टहास करते हुए) - पत्थर की मूर्ति! तेरा साक्षात् भगवान। (फिर क्रोध से) - मैं तुझे माफ करना चाहता हूँ पर तू हर सीमा को पार ही करती जा रही है। अब तुझ पर दया करना व्यर्थ है। (फिर म्यान से तलवार निकालते हुए) यदि तू नहीं मानती है तो हे कुल कलंकिनी! ले हो जा मरने को तैयार। (धाय माँ संयोगिता का बचाव करने बीच में आती है पर जयचन्द धक्का देकर संयोगिता पर तलवार से वार करना चाहता है। सहसा पृथ्वीराज चौहान प्रवेश करके तलवार का वार रोकता है और धाय माँ को उठाता है)

: (जयचन्द से) - वाह जयचन्द वाह। जय हो तुम्हारी। आज पता चला कि तुम तो बहुत बडे शूरमा हो। एक अबोध और निहत्थी बालिका पर तुम जैसा बहादुर पिता ही वार कर सकता है।

जयचन्द (पृथ्वीराज का देखकर आगबबूला होते हुए) आजा बदमाश तू भी आजा। अब मैं तुम दोनों को एक ही साथ तलवार से मौत के घाट उतारूंगा।

पृथ्वीराज : (संयोगिता का हाथ पकड़ते हुए) – हे हृदयेश्वरी! यदि तुम अब भी अपने इरादे पर अटल हो और मुझे अपना पति होने के योग्य समझती हो तो आओ मेरे साथ (संयोगिता का हाथ पकड़कर दरबार से बाहर जाने का प्रयास करता है)

धाय माँ : (पृथ्वीराज से) – हे महाराज! मेरी आँखों का तारा आज आप लिए जा रहे हैं। इसे हिफाजत से रखना महाराज (फिर सिसकती है)

संयोगिता : (सांत्वना देती हुई) : मत रो धाय माँ। मेरी चिन्ता मत करो पर इन पापियों की भूमि में अपना ख्याल रखना माँ।

जयचन्द : (अपने सैनिकों को ललकारते हुए) – हे मेरे बहादुर शेरों। पकड़ लो इस कायर को –

(सैनिक पृथ्वीराज को रोकने की कोशिश करते हैं परन्तु पृथ्वीराज संयोगिता को लेकर तेजी से निकल जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

आठवाँ दृश्य

(उस्ताद, जमूरे व कजरी का प्रवेश)

उस्ताद : जमूरे!

जमूरा : क्या है उस्ताद?

उस्ताद : वो बजरी कहाँ है?

जमूरा : बजरी! उस्ताद बजरी का तुम क्या करोगे! (कुछ सोचता हुआ) अच्छा-अच्छा अपना स्टैण्डर्ड सुधार रहे हो उस्ताद। उस पुराने झोंपडे की जगह पक्का मकान बनवा रहे होंगे शायद। चलो हम सुबह ही गाड़ी वाले को कह देंगे बजरी के लिए।

उस्ताद : अबे जमूरे आज भांग खाई है क्या?

जमूरा : क्यों उस्ताद?

उस्ताद : अबे मैंने तो इस लड़की के बारे में पूछा है और तू अनर्गल बके जा रिया है।

जमूरा : (ताली मारते हुए) - अरे वो लड़की! अबे उस्ताद वो बजरी नहीं है, उसका नाम कजरी है कजरी।

कजरी : (दौड़कर आती हुई जमूरे से) क्यों बे तीतर! क्या चुगली कर रहा था मेरी उस्ताद से।

उस्ताद : अरे चुगली नहीं कर रहा था कजरी। ये तो मुझे तुम्हारा नाम बता रहा था कि तुम कजरी हो।

कजरी : अबे! मैं कोई संस्कृत का श्लोक हूँ जो मेरा नाम एक बार में समझ में नहीं बैठता। सच-सच बताओ बात क्या थी?

उस्ताद : अरे कजरी, मैं तो यह पूछ रहा था कि नाटक कैसा लग रहा है?

जमूरा : लग तो अच्छा रहा है उस्ताद। पर......

उस्ताद : पर क्या रे जमूरे।

कजरी पर ये उस्ताद कि साला जब जब नाटक में मजा आता है तो तुम बीच ही में बटन बन्द कर देते हो।

उस्ताद : अच्छा भई तौबा – तौबा। यदि तुम्हें नाटक अच्छा ही लग रहा है तो स्वीच चालू कर देते हैं।

जमूरा : कजरी (खुशी से) – हे........हे..........।

(दृश्य समाप्त)

****

नवां दृश्य

(जयचन्द का दरबार लगा हुआ है, वह पृथ्वीराज द्वारा संयोगिता का हरण किये जाने से क्रोधित है।)

धिक्कार है हमें कि हमने अपनी सेना में कायरों को स्थान दे रखा है। इतनी विशाल सेना के होते हुए भी हमारा सबसे बड़ा दुश्मन हमारी इज़्ज़त को कुचलता हुआ संयोगिता को लेकर फरार हो गया और ये नमक हराम सिपाही तमाशा देखते रह गये।

क्षमा करें महाराज। आप सही फर्माते हैं। महाराज हमारी तरफ से स्वयंवर का उचित इन्तजाम था परन्तु हमें क्या पता था कि इस खुशी के मौके पर पृथ्वीराज स्वयं आ पहुँचेगा। हमारे सैनिकों ने उसे रोकने का बखूबी प्रयास किया है महाराज और बहादुर सैनिक उसके पीछे गये हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि वो उसे मौत के घाट उतारकर राजकुमारी जी को शीघ्र ही अपने साथ ले आयेंगे।

हमें भरमाओ मत मंत्रीवर। जब दुश्मन को हम हमारे ही घर में परास्त न कर सके तो वे कायर सैनिक बाहर क्या मौत के घाट उतारेंगे।

: क्षमा करें महाराज! मैंने तो आपको पहले ही मना किया था कि पृथ्वीराज की मूर्ति द्वार पर न लगवायें। परन्तु आपने मेरी राय को महत्व ही नहीं दिया।

: (प्रवेश करके) – क्षमा करें महाराज। गजब हो गया। हमारी सेना भ्रम में थी कि पृथ्वीराज अकेला है। परन्तु उसने ज्यों ही एक आवाज दी तो देखते ही देखते उसके असंख्य सैनिक निकल आये और हमारे सारे सैनिकों को मौत के घाट उतारकर आसानी से निकल गये

जयचन्द : (क्रोध स फुफकारते हुए अपन सब योद्धाओ की ओर इशारा करते हुए) – इन सबकी बहादुरी का कायल तो मैं उसी समय हो गया था जब मेरा सबसे बड़ा दुश्मन संयोगिता को लेकर यहाँ से सकुशल साफ बच निकला था।

परन्तु मेरा नाम भी जयचन्द है जयचन्द। मैं हारने वाला नहीं हूँ। अपनी एक ही चाल से अपने दुश्मन का सफाया कर दूँगा मैं। पृथ्वीराज, मेरे सबसे बड़े दुश्मन! मैं तेरे कुल का नामोनिशान मिटा दूँगा। देख अब मैं भी क्या मायाजाल रचाता हूं। तेरे खून से प्यासे शाहबुद्दीन गौरी को अभी बुलाता हूं और उसे सैनिक सहायता देकर अभी दिल्ली पर चढ़ाई कराकर तेरा सर्वनाश कराता हूँ। फिर देखना पाजी मेरी बहादुरी।

रामसिंह : महाराज। आपका ये आचरण धर्म और नीति के विरुद्ध है, राजपूती मर्यादा के खिलाफ है। यह अपना आपसी विषय है अतः इस विवाद में किसी बाहरी शासक को बुलाकर भारतवर्ष की तबाही के बीज न बोइए।

जयचन्द : (कुटिलता से मुस्कुराते हुए) – चाचाजी आप अभी समझे नहीं। शाह गजनी को भारतवर्ष की सत्ता में कोई दिलचस्पी नहीं। वह तो केवल अपने दुश्मन पृथ्वीराज से बदला लेना चाहता है और धन का लोभी होने के कारण लूट का माल अपने साथ ले जायेगा और पृथ्वीराज को हराकर दिल्ली की सत्ता मुझे सौंप जायेगा।

रामसिंह : बेटा जयचन्द। मेरा कहा मान और ऐसे तुच्छ विचार अपने मन से निकाल दे। यदि तूने ऐसा किया तो जन्म जन्मान्तर के लिए दाग तेरे माथे पर लग जायेगा।

जयचन्द : (क्रोध में) ऐसा लगता है कि उम्र के साथ-साथ आपकी बुद्धि भी सठिया गई है अन्यथा आप मेरे दुश्मन को परास्त करने में मुझे अनुकूल मशविरा देते। अब यदि आपने आगे ज़बान खोली तो

(आश्चर्य से) - तो क्या करोगे बेटा?

यदि आप मेरे राज्य सम्बन्धी निर्णयों में हस्तक्षेप करेंगे तो यहां से जबरदस्ती निकाल दिये जाओगे।

मुझे निकालने की आवश्यकता नहीं जयचन्द। लगता है अब तेरे सर्वनाश का समय आ गया है क्योंकि तेरी बुद्धि भ्रष्ट हो गई है। ले मैं स्वयं ही तुझे अपनी तकदीर के सहारे छोड़कर जा रहा हूँ। (प्रस्थान करता है।)

(प्रवेश करके) महाराज की जय हो।

ठीक समय पर आए जोधमल। कहो सब कुशल मंगल है न?

सब ठीक है महाराज। मेरे लायक कोई सेवा हो तो आज्ञा करे।

तुम शीघ्र तैयार होकर आओ जोधमल। तुम्हें तुरन्त ही गजनी के लिए प्रस्थान करना है।

(आश्चर्य से) - गजनी के लिए। लेकिन किस काम से?

जोधमल! तुमने तो उस कायर पृथ्वीराज की करतुत देख ही ली। अब मैं उस अभिमानी से अपने अपमान का बदला लेना चाहता हूँ। मैं शाहबुद्दीन को सैनिक सहायता देकर दिल्ली की ईंट से ईंट बजवाना चाहता हूँ। अतः तुम मेरा पत्र लेकर गजनी जाओ और पत्र देकर उनसे यहां आने का प्रयोजन बताओ।

(जोधमल सोच में पड़ जाता है)

किस सोच में पड़ गए जोधमल?

क्षमा करें महाराज। यह सेवक आपकी हर आज्ञा मानने को तैयार है लेकिन ऐसा निकृष्ट कार्य करने को तैयार नहीं। आप अपने निर्णय पर पुनः विचार करें महाराज। आप जो काम करने जा रहे हैं वह धर्म-नीति और क्षात्र धर्म के लिए कलंक है और भारतवर्ष की तबाही की भूमिका है।

खबरदार जोधमल। यह विवाद का समय नहीं बल्कि संकट का समय है, अतः शीघ्र गजनी के लिए प्रस्थान करो। यह मेरी आज्ञा है।

जोधमल : आप मेरे स्वामी हैं महाराज और आपकी आज्ञा का पालन करना मेरा धर्म है। आपकी आज्ञा से मैं इसी क्षण पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने को तैयार हूँ, पर यदि आप विदेशी शासक शाहबुद्दीन को भारत में बुलायेंगे तो वह पहले मेरे ही हाथों से मारा जायेगा।

(आवेश में प्रस्थान कर जाता है)

जयचन्द : (विजय सिंह से) – विजय सिंह! जाने दो इस नमक हराम को। यह भी कायर और डरपोक निकला। हे वीर! यह भार अब तुम्हें ही उठाना है (पत्र देते हुए) ये लो पत्र और इसे शीघ्र शाह गजनी तक पहुंचा दो।

विजय सिंह : (झुककर पत्र लेता हुआ) – जैसी महाराज की आज्ञा।

(प्रस्थान करता है)

(दृश्य समाप्त)

****

दसवां दृश्य

(उस्ताद, जमूरे एवं कजरी का प्रवेश)

जमूरा : ये क्या हो रहा है उस्ताद ?

उस्ताद : क्या हो रहा है भाई ?

कजरी : इसका मतलब है उस्ताद, कि शाहबुदीन गौरी की सेना उसकी चालबाजी के कारण स्वयं ही उसके विरोध में होती जा रही है।

उस्ताद : हाँ भई कजरी, ये बात तो है। तुम लोग तो जानते ही हो कि मनुष्य के लिये नेकनियति की होड़ नहीं होती, और दुर्भावना एवं द्वेषता की कोई आयु नहीं होती।

जमूरा : कैसे उस्ताद ?

उस्ताद : अरे भई, गौरी भले ही विदेशी शासक रहा हो, परन्तु जब वह महाराज पृथ्वीराज चौहान से युद्ध लड़ने आया तो सारी सेना गौर से अपने साथ थोड़े ही लाया था।

कजरी : हम तो ऐसा ही समझ रहे थे अब तक।

उस्ताद : तुम्हारे समझने से सब कुछ वैसा का वैसा (झुंझलाकर) थोड़े ही हो जायेगा।

जमूरा : (बीच-बचाव करते हुए)- छोड़ो उस्ताद, यह तो नासमझ है, तुम आगे बताओ।

कजरी : (जमूरे का हाथ मरोड़ते हुए)- क्या कहा बे, मैं नासमझ हूँ ? नासमझ होगा तू, तेरा बाप, तेरा दादा, तेरा पड़दादा........

उस्ताद : (उसे प्रेम से समझाते हुए)- अरे छोड़ो कजरी छोड़ो इसे। अच्छा एक बात बताओ ।

कजरी : क्या ?

उस्ताद : अगर यह छोटा सा, प्यारा सा जमूरा तुझे नासमझ नहीं कहता तो हम तुम्हें पृथ्वीराज चौहान के बारे में आगे बताते ही नहीं।

कजरी　　　　　क्या ?

उस्ताद　　　　: अरे भई इसलिए कि समझदार लोगों को कुछ बताने की जरूरत ही कहाँ रह जाती है।

कजरी　　　　: अच्छा ऐसी बात है। ठीक है, चलो नासमझ रहने से हमें कुछ नई बात पता चलती है तो नासमझ रहना ही ठीक है।

उस्ताद-जमूरा　: ऐसी बात है, तो ला दे ताली।

(कजरी उस्ताद एवं जमूरे के हाथों पर उछलकर अपने दोनों हाथों से ताली देती है, और तीनों नृत्य करते हुए गाते हैं)-

पृथ्वीराज को रोकना, जयचन्द के वश था नहीं,
कायरों में वीरता, होती कहीं देखी कहीं ।
चोट खाया नाग सा वह, और क्या करता भला,
शाह गजनी से मिले बस, और क्या रास्ता बचा।
जयचन्द के जब स्वजनों ने, नीति सम्मत राय दी,
दुर्भावना में लिप्त हो, उसने कहीं उनकी सुनी।
रामसिंह और जोधमल्ल, रणबाँकुरे सरदार थे,
अपमान जयचन्द का किया, इस भाँति वे कैसे सहें।
छोड़कर जयचन्द को, हित मातृभूमि का किया
आगे रहा क्या हाल वो सब, हम तुम्हें देते दिखा।

(तीनों का गाते हुए मंच से प्रस्थान। प्रकाश मंद मंद होते हुए बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

ग्यारहवाँ दृश्य

(रणभूमि का दृश्य। शाहबुद्दीन और पृथ्वीराज दोनों की सेनाएँ मोर्चे पर डटी हुई हैं। अभी युद्ध प्रारम्भ नहीं हुआ है। पृथ्वीराज और जोधमल आपस में बातें करते हुए प्रवेश करते हैं)

क्षमा करें महाराज! परन्तु आज जयचन्द ने जो एक विदेशी को सैनिक सहायता देकर युद्ध के लिए उकसाया है वह राजपूती उसूलों के विरुद्ध है, वीरता के नाम पर धब्बा है और मातृभूमि के माथे पर कलंक है महाराज। (उसकी दोनों मुट्ठियाँ और दाँत आवेश में आने के कारण भिंच जाते हैं।)

(रूक कर जोधमल का हौसला बढ़ाते हुए) शांत हो वीर, शान्त हो। भले ही जयचन्द देश के प्रति बागी हो जाए, भले ही वह शाहबुद्दीन से मिलकर हमारे पर आक्रमण करे (फिर शून्य में देखते हुए) परन्तु जोधमल। हम भी इस पाजी और कमीने को रणभूमि में ऐसा सबक सिखायेंगे कि वह तो क्या उसकी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी, नसीहत यह होगी हम उसकी ऐसी गत करेंगे कि फिर कोई राजपूत अपने उसूलों के साथ गद्दारी नहीं करेगा।

(कुछ सोचते हुए) क्षमा करें महाराज।

(रुकते हुए) – हाँ कहो जोधमल क्या कहना चाहते हो।

महाराज मैं एक सन्देशा आपके पास पहले लेकर आया था और दूसरा आज लेकर आया हूं। यदि आप उचित समझें तो इनका ईनाम चाहता हूं महाराज।

(अवाक् रह जाता है) – वीर जोधमल। हम तो तुम्हें पहले भी ईनाम देना चाहते थे पर तुम ही ने कहा था कि तुम ईनाम लेकर क्षात्रधर्म का नहीं करना चाहते उस रोज किसी

बहादुर के मुह से ऐस शब्द सुनकर हम आशान्वित थे कि राजपूताने में अभी भी सच्चे वीर मौजूद हैं खैर तुम ईनाम चाहते ही तो हम तुम्हें अवश्य देंगे। मांगो जोधमल क्या ईनाम मांगते हो।

न : (पृथ्वीराज के पैरों में पड़कर) क्षमा करें महाराज। मैं जयचन्द का साथ हमेशा के लिए छोड़ आया हूँ। उसके कायरतापूर्ण निर्णय को मेरी आत्मा ने नहीं स्वीकारा महाराज, अतः अब आप मुझे अपने साथ मिलकर वीरता दिखाने का ईनाम दीजिए और अपनी शरण में ले लीजिए महाराज।

ज : (गद्गद् होकर) धन्य हो वीर तुम धन्य हो, तुम्हारी देशभक्ति से भारतमाता का मस्तक आज गर्व से ऊँचा हुआ । तुम भारतमाता के होनहार सपूत हो। मैं तुम्हें अवश्य आश्रय देता जोधमल, परन्तु भारतीय संस्कृति के अनुसार तुम्हें संकट में उसी का साथ देना चाहिए जिसका तुमने नमक खाया है। अपने स्वामी की आज्ञा का पालन करना ही सच्ची देश भक्ति है वीरवर, अतः मेरा कहना मानो और वापस जयचन्द के पास चले जाओ।

न : (विश्वास के साथ) –यह सत्य है महाराज की सेवक को अपने स्वामी का साथ देना चाहिए। परन्तु यह भी तो सेवक का कर्तव्य है महाराज कि अपने स्वामी को उसके अहित से बचाना चाहिए। मैंने जयचन्द को हजार बार समझाने का प्रयास किया कि शाहबुद्दीन को सैनिक सहायता देना हम सभी के विनाश का, भारतवर्ष की भावी दुर्गती का कारण होगा, पर वह न माना महाराज। यदि जयचन्द बहादुरीपूर्वक मुझे कही भी लड़ने को भेजता तो मैं अवश्य जाता, पर मैं कायरतापूर्वक लड़ने को या ऐसे में किसी का साथ देने को भारतीय संस्कृति और क्षात्र धर्म के अनुकूल नहीं समझता महाराज।

ज : (जोधमल को गले से लगाते हुए) धन्य हो वीर, तुम धन्य हो! राजपूती वीरों के प्रति मैं आशान्वित हुआ (फिर उसे अलग

करते हुए कुछ सोचता हुआ) तुम्हारी दलीलें और दृढ़ निश्चय को देखते हुए मैं तुम्हें रण में जाने की इजाजत देना चाहता हू वीर जोधमल। परन्तु.........

(उत्सुकता से बात काटते हुए) परन्तु क्या महाराज, क्या कोई समस्या है ?

कोई समस्या नहीं है जोधमल। परन्तु अभी-अभी समाचार आया है कि तुम्हारी माता बीमार है और ऐसी दशा में माता की सेवा करना तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है। जोधमल जननी का स्थान जन्मभूमि से भी ऊँचा होता है और ऐसी दशा में यही नीति संगत है कि तुम पहले अपनी माता की सेवा करो।

(अचानक कराहते हुए जोधमल की माता का प्रवेश)

धन्य हैं महाराज, आप धन्य हैं। आपके विचार और नीति आपकी योग्यता को दर्शाते हैं। धन्य है यहां की प्रजा जो आपके जैसे राजा का नेतृत्व पाया (कराहती हुई निढ़ाल-सी होती है जोधमल उसे सहारा देता है)

आप बीमार हैं माता, विश्राम करें। मैं जोधमल को आपकी सेवा सुश्रुसा के लिए छोड़े जा रहा हूं।

नहीं महाराज नहीं। आप मेरी परवाह न कीजिए। मुझसे ज्यादा पीड़ित आज भारत माता है। आज मुझसे अधिक सहारा भारत माता को अपने पुत्रों का चाहिए।

फिर जोधमल से) जाओ पुत्र आज तुम्हारी परीक्षा का समय है। आज तुम्हारा धर्म अपनी माता से अधिक भारत माता की रक्षा करने का है।

धन्य हो वीर जननी तुम धन्य हो। तुम जैसी वीर माताओं के लिए भारत का मस्तक अन्य देशों के सामने गर्व से सदैव ऊँचा रहेगा, परन्तु आप अत्यन्त रुग्णावस्था में हैं और ऐसी दशा में एक पुत्र का अपनी माता की सेवार्थ रहना न्यायसंगत एवं नीति सम्मत है।

अन्ना क्षमा करे महाराज नीति यह भी कहती है कि वीर योद्धा को मे अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ अपनी माता के दु ख को भी भूल जाना चाहिए। यदि आप मेरी अवस्था पर दया करके मेरे पुत्र को रण में न ले गये महाराज, तो इतिहास मुझे कलंकिनी समझेगा, मेरा पुत्र वीरों की श्रेणी में आने से वंचित रह जायेगा महाराज, और मरने के बाद भी मेरी आत्मा अपने आपको क्षमा नहीं कर सकेगी। (फिर जोधमल से) - हाँ मेरे वीर पुत्र! तुझे मेरी कसम है जो युद्ध में न जायेगा। एक क्षत्राणी ने जो वीरता के दूध के घूंट तुम्हें बचपन में पिलाये हैं, आज उसकी मर्यादा रख ले मेरे पुत्र। आज से मैं हमेशा-हमेशा के लिए तुझे अपनी मोह माया के जाल से मुक्त करती हूँ। (अपने सीने में कटार भोंक लेती है)

जोधमल : (अन्ना के पास जाता है) - हाँ माता मैं अवश्य जाऊँगा। तुम्हारे दूध का मान रखूंगा माता।

अन्ना : हां मेरे लाल। अब तू निश्चिंत होकर युद्ध में जा। अब तो महाराज भी तुम्हें नहीं रोकेंगे (दम तोड़ देती है)

(पृथ्वीराज सहित सभी के चेहरों पर विषाद की रेखाएं हैं पर जोधमल के मुख पर गर्व की चमक है। प्रकाश धीरे-धीरे अन्ना पर आकर स्थिर हो जाता है। पर्दा गिरता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

बाहरवां दृश्य

स्थान : युद्ध भूमि का एक हिस्सा।

(जयचन्द का अपने सैनिकों का उत्साह बढ़ाते हुए प्रवेश)

: हे मेरे वीर सैनिकों! अब समय आ गया है तुम्हें अपनी बहादुरी दिखाने का। अपने नमक का हक अदा करने का। अब मैं इस नीच और कायर पृथ्वीराज को ऐसा सबक सिखाऊँगा कि सुनने वालों के और देखने वालों के भी रोंगटे खड़े हो जायेंगे। एक नीच और कायर से क्या अपने अपमान का बदला लेने को तुम सभी सहमत हो?

सब सैनिक (ऊँची आवाज में) हां, हम सब सहमत हैं।

· क्षमा करें महाराज मेरे ख्याल में महाराज पृथ्वीराज ने कायरता और नीचता जैसा कोई कार्य नहीं किया।

: (क्रोध में) - चुप रहो सैनिक। तुम नहीं जानते कि तुम किसके सामने और किसकी तरफदारी कर रहे हो? (फिर सब सैनिकों से) - क्या यह सही नहीं है कि उसने स्वयंवर में अनाधिकृत प्रवेश करके और हमारी पुत्री संयोगिता का हरण करके हमारा अपमान नहीं किया। (सब सैनिक चुप)

. (सब सैनिकों को निहारते हुए महाराज की ओर उन्मुख होकर) क्षमा करें महाराज। आपके सोच में द्वेष है। आप ही ने प्राचीन परम्परा के अनुसार संयोगिता का स्वयंवर रचाया था जिसमें राजकुमारी जी ने महाराज पृथ्वीराज को वरमाला पहनाकर पतिरूप में वरण किया था। जब आपने राजकुमारी जी को खत्म करना चाहा तो महाराज पृथ्वीराज ने अपनी पत्नी की ज़ीवन-रक्षा करके नीति-सम्मत और वीरता का ही कार्य किया है। और वे कन्नौज से राजकुमारी जी को कायरता से नहीं

बल्कि वीरता से ले गये हे बहुत से सैनिक (एक स्वर में) हाँ महाराज पृथ्वीराज चौहान कायर नहीं वीर हैं।

जयचन्द : (ललकारते हुए क्रोध से) नमक हरामों। तुम्हें इसकी सजा अवश्य मिलेगी। अभी हम युद्ध में व्यस्त हैं। युद्ध समाप्ति के बाद हम तुम्हारा निर्णय राजदरबार में करेंगे।

वही सैनिक : तब तक हम आपकी सेना में रहेंगे ही नहीं महाराज। ऐसे अन्यायी राजा का साथ हम कभी नहीं देंगे।

बहुत से सैनिक (एक साथ) – हाँ कभी नहीं देंगे। रणभूमि से प्रस्थान कर जाते हैं। इसके साथ ही शाहबुद्दीन अपने सरदारों के साथ प्रवेश करता है।

जयचन्द : (अगवानी करते हुए) – आइए हुजूर आइए। इधर कदम रजा फरमाइए।

शाहबुद्दीन : मैं आपके पैगाम और हमदर्दी का शुक्रगुजार हूं राजा साहब। आपने हमें जो सहयोग दिया है एवं गजनी पर जो एहसान किया है उससे गजनी का बच्चा-बच्चा आज आपका एहसानमन्द है महाराज।

जयचन्द : (झेंपते हुए) यह तो आपका जर्रानवाजी है आलीजाह जो आप इस नाचीज की शान में चार चाँद लगा रहे हैं। यह तो बन्दे की खुशकिस्मती है जो आपके किसी काम आ सका।

शाहबुद्दीन : अच्छा तो अब युद्ध प्रारम्भ होने में देर किस बात की है राजा साहब ?

जयचन्द : (कुटिलता से) – कोई देर नहीं है महाराज। परन्तु......

शाहबुद्दीन : परन्तु क्या राजा साहब। आप कोई संकोच न करें। हमसे स्पष्ट कहें।

जयचन्द : अगर गुस्ताखी माफ हो आलीजाह, तो अपने दरम्यान जो शर्तें तय हुई थीं उनको एक बार फिर दोहराना चाहता हूं।

शाहबुद्दीन : (हँसते हुए) – आप निश्चिन्त रहें राजा साहब। अपने दरम्यान जो शर्तें तय हुई थीं उन पर मैं अटल हूं। युद्ध में विजय के

उपरान्त मुझे पृथ्वीराज चौहान चाहिए। दिल्ली की हुकूमत म आप ही को सौंप दूंगा उसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। अब आप अपने सैनिकों को युद्ध की आज्ञा दीजिए। (प्रस्थान)

(प्रकाश बुझा है एवं फिर जलता है।)

(मंच पर युद्ध के मैदान का दूसरा भाग दिखाई देता है जहां पृथ्वीराज अपने सैनिकों को उद्बोधित कर रहे हैं)

पृथ्वीराज : हे भारत भूमि के वीर योद्धाओं! आज तुम्हारी परीक्षा का समय आ गया है। आज वह कायर शाहबुद्दीन फिर युद्ध के लिए आ गया है जिसको अनेक बार दया करके हमने जीवन-दान दिया। परन्तु इस बार उस देशद्रोही जयचन्द ने इसको सैनिक सहायता दी है इसलिए वीरों यह युद्ध हमें बहादुरी से लड़ना है और उन दोनों को सबक सिखाना है।

सेनापति : आप चिन्ता न करें महाराज। हमारे वीरों ने केसरिया बाना पहन रखा है। बस अब आपके इशारे की देर मात्र है, हमारे योद्धा शाहबुद्दीन को हराकर उन दोनों को जिन्दा पकड़ लाने में समर्थ हैं।

(दोनों ओर बारी-बारी से रणभेरी की आवाज आती है। पृथ्वीराज के सैनिक धीरे-धीरे युद्ध को जा रहे हैं। महाराज पृथ्वीराज भी अपने सैनिकों के साथ प्रस्थान करते हैं। प्रकाश धीरे-धीरे मंद होकर बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

तेरहवां दृश्य

(उस्ताद, जमूरे व कजरी का पृथ्वीराज के विजयोत्सव का गान करना)

राग – पीलू बरवा **ताल – कहरवा**

उस्ताद : पृथ्वीराज चौहान की, सेना में थे वीर।
सुनो जमूरे काजरी गौरी की तकदीर॥
(जमूरा व कजरी पास आ जाते हैं)

उस्ताद : हाँ तो भई क्या हुआ?

जमूरा व कजरी : (दर्शकों की ओर देखते हुए) – हाँ भई क्या हुआ युद्ध में।
आप सब भी सुनो (गाते हैं)
पृथ्वीराज चौहान की, सेना में थे वीर।
सुनो-सुनो तुम भी सुनो, गौरी की तकदीर॥

उस्ताद : गौरी जिस पर कूदता, वह कायर जयचन्द।
दिल्ली की सत्ता मिले, यह सोचे हर दम॥

कजरी व जमूरा : युद्ध हुआ घनघोर यों, चौहानों की जीत।
गौरी की सेना भगी, होकर के भयभीत॥

उस्ताद : गौरी को फिर डाल दी, लोहे की जंजीर।

जमूरा व कजरी : आगे की लो देख लो, गौरी की तकदीर।
उस्ताद, जमूरा व कजरी का गाते हुए प्रस्थान। मंच पर प्रकाश मन्द-मन्द हुआ होता लुप्त हो जाता है।

(दृश्य समाप्त)

****

चौदहवां दृश्य

(महाराज पृथ्वीराज चौहान का दरबार। शाहबुद्दीन को जंजीरों में जकड़े हुए वीर सैनिकों का दरबार में प्रवेश)

: (व्यंग से) आइये। आइये मेहरबान। हमारे दरबार में आपका स्वागत है। हमारे लायक कोई खिदमत हो तो बखान करें।

: नजरें झुकाए हुए खामोश रहता है, कुछ नहीं बोलता।

: क्या खूब रही शाह गजनी। आप अकेले ही तशरीफ लाये हैं। दिल्ली के उस भावी कायर नरेश, जो मैदान से पीठ दिखाकर भाग रहा था, उसको ऐसे सम्मानजनक अवसर पर आप अपने साथ नहीं ला सके।

(हाथ जोड़कर और गिड़गिड़ाते हुए) - महाराज मैं बहुत शर्मिन्दा हूं। मुझे अपने किये पर बहुत पछतावा है। मैं तो उस चालबाज जयचन्द के बहकावे में आ गया था महाराज। आप महान हैं, वीर हैं, चौहान वंश के वीर शिरोमणी हैं महाराज। इस खादिम की गलती पर न जाइये और मुझे क्षमादान दीजिए।

(क्रोध से) चुप कर कमीने और मक्कार। मैंने तेरी बातों में आकर तुझे हर बार क्षमादान दिया और एहसान फरामोश तूने हर बार लौटकर वापस मुझ पर ही आक्रमण किया। तू क्षमा के योग्य है ही नहीं। अब बोल तुझे अपने किये की क्या सजा दी जाए।

(पैरों में गिरते हुए) दुहाई है महाराज दुहाई है। आपने मुझे हर बार क्षमा किया, इससे संसार में आपकी कीर्ति बढ़ी है महाराज। क्षमा आप जैसे कीर्ति पुरुष का आभूषण है महाराज। वो तो मुझे जयचन्द ने दम दिलासे देकर उकसाया था अन्यथा आप जैसे बहादुर और प्रतापी राजा की बहादुरी का मैं तो कायल था महाराज।

पृथ्वीराज : (कुछ पसीजते हुए) – तुम्हारा कोई दीन ईमान नहीं है शाहबुद्दीन। अब हम तुम पर किस प्रकार भरोसा करके रिहा करें। इस बात का क्या सबूत है कि तुम जो कुछ कह रहे हो सच कह रहे हो और भविष्य में ऐसी गलती नहीं करोगे?

शाहबुद्दीन : (कुछ आशान्वित होते हुए) – मैं मक्कार हूं। कमीना हूं महाराज। परन्तु अबकी बार मेरी बात पर और यकीन कीजिए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आईन्दा कभी लौटकर नहीं आऊंगा।

(पृथ्वीराज सोच में पड़ जाते हैं)

धीर पुन्डीर : क्षमा करें महाराज। मेरे ख्याल में आप इनकी बात पर विचार कर सकते हैं, जो व्यक्ति क्षमा की भीख चाहता है उसे एक बार और अवसर दिया जा सकता है।

चामुण्ड राय : मेरे ख्याल में इन्हें रिहा करना उचित नहीं महाराज, क्योंकि यह छूटते ही बाहर जाकर फिर उत्पात मचायेगा।

पृथ्वीराज : आपका कहना उचित है चामुण्डराय, परन्तु जब यह क्षमादान मांग ही रहा है तो इसे एक अवसर और दिया जा सकता है। (फिर धीर पुण्डीर की ओर मुखातिब होकर) – इसका कसूर तो बहुत बड़ा है वीरवर परन्तु आप सब सामन्तों से विचार विमर्श और सिफारिश के आधार पर हमारा हुक्म है कि इससे तीस हाथी और पाँच सौ घोड़े बतौर हर्जाने के लेकर छोड़ दीजिए (फिर गौरी की ओर मुखातिब होकर) जाओ शाह गजनी जाओ और फिर कभी मेरी आँखों के सामने मत आना। (धीर पुण्डीर गौरी के बन्धन खोल देता है और गौरी दुआएं देता हुआ। प्रस्थान करता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

पन्द्रहवां दृश्य

(शाहबुद्दीन गौरी का दरबार लगा हुआ है। शाहबुद्दीन पृथ्वीराज द्वारा दी गई मात से क्रोधित है। उसकी फौज के मुख्य सरदार व सलाहकार अपनी-अपनी राय देकर उसका हौसला बढा रहे हैं।)

(गुस्से से दाँत चबाते हुए और दोनों हाथों की मुट्ठियां भींचते हुए) - मुझे सख्त अफसोस है कि मैंने जब-जब हिन्दुस्तान पर आक्रमण करके जीतने की तदबीर चलाई तब-तब यह पृथ्वीराज चौहान बीच में रुकावट बनकर सामने आ गया। (फिर सबकी ओर देखते हुए) कभी-कभी तो मैं यह भी सोचता हूँ कि मैं क्यों हिन्दुस्तान पर आक्रमण करुं। परन्तु मेरा जमीर मेरे इन विचारों को मानने नहीं देता। हिन्दुस्तान सोने की चिड़िया है और मैं उसका मोह क्योंकर छोड़ सकता हूँ। उसके नूर के दीदार की चाह ने मुझ पर नशा-सा कर दिया है। (फिर शून्य में देखते हुए ललचाई निगाहों से प्रसन्न होकर) वो देखो वहां की सम्पन्नता, वैभवता और राजसी ठाठ-बाट। अब तो मैं उन सबको हासिल करके ही रहूंगा।

: आप जी छोटा न कीजिए आलीजाह। अगर हम अपना हौसला कायम रखेंगे तो एक न एक दिन निश्चय ही उस सोने की चिड़िया हिन्दुस्तान को अपना गुलाम अवश्य बना लेंगे।

. तुम्हारा कहना ठीक है नश्तर खान। परन्तु हिन्दुस्तान पर फतह कर पाना इतनी आसान बात नहीं है। वहां का बच्चा-बच्चा दिलेर है। और पृथ्वीराज (प्रशंसात्मक रूप में आँखें मूंदकर खोलते हुए) वाह, वाह। ऐसा सूरमा न हमने आज तक देखा . न सुना। वह तो शेरों का भी शेर है और काल का भी काल है,

उसके सभी सैनिक व साथी अपने देश के लिए मर मिटने को सदा तैयार हैं। (फिर अफसोस करते हुए) –काश! हमारे सैनिकों में भी ऐसी भावना होती तो हम अब तक हिन्दुस्तान फतह कर चुके होते।

नश्तर खान : (सान्त्वना देता हुआ) – आप इत्मीनान रखिए आलीजाह। (फिर दोनों हाथ ऊपर करता हुआ) – वह अल्लाह ताला बड़ा रहम दिल है। आप उस पर भरोसा रखिए। जब उसकी रहमत होगी तो यह हिन्दुस्तान तो क्या, सारी दुनियां पर आपकी हुकूमत होगी।

चोबदार : (प्रवेश करके झुककर सलाम करता हुआ) – जहाँपनाह। हिन्दुस्तान से आलीजाह के नाम पैगाम लेकर कोई आया है।

शाहबुद्दीन : (कुछ सोचकर) – जाओ और उसे बिना किसी रोक-टोक के हमारी हुजूरी में पेश करो।

धर्मायण : (प्रवेश करके सलाम करते हुए) – आलीजाह की खिदमत में यह गुलाम सलाम बजा लाता है।

शाहबुद्दीन : (खुश होकर) – क्यों धर्मायण आज तो बहुत दिनों में आये हो और बड़े खुश नजर आते हो। क्या कोई खुशखबरी लाये हो?

धर्मायण : (उतावला होते हुए खुशी से) – हां आलीजाह। बहुत बड़ी खुशखबरी लाया हूं। अब आप जल्द से जल्द शाही फरमान जारी कीजिए और अपनी फौजें सजाकर शीघ्र ही हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दीजिए।

शाहबुद्दीन : (आश्चर्य से) – क्या तुम होश में हो धर्मायण। क्या तुम जो कुछ कह रहे हो वह होने योग्य है?

धर्मायण : (निश्चिन्तता से) – हां महाराज। मैं वहां का हाल, आपसी द्वेष भाव और राजपूतों की फूट स्वयं अपनी आँखों से देखकर आया हूं।

शाहबुद्दीन : (खुशी से अपने पास बुलाते हुए) – अरे दूर क्यों खड़े हो धर्मायण। यहां आओ हमारे पास (धर्मायण पास आ जाता है)

– अब सुनाओ वहां के हाल जो तुम देखकर आये हो।

. (दृढ़ता से) – महाराज। मेरी बात पर यकीन कीजिए। पहली बात तो यह कि इस लड़ाई में पृथ्वीराज चौहान के अधिकाश बहादुर शूरवीर काम आ चुके हैं और वीर फै मास जैसे नीतिवान और विश्वस्त व्यक्ति को पृथ्वीराज ने स्वयं ही मिटा दिया है तथा चामुण्डराय को कैदखाने में डाल दिया गया है।

: (ताली बजाते हुए) –होय, होय। (फिर धर्मायण की ओर देखते हुए) अरे तुम रूक क्यों गये धर्मायण। आगे सुनाओ आगे।

· (प्रसन्न होकर) – महाराज! पृथ्वीराज स्वयं ऐशो आराम में इतना डूब गया है कि अब न उसे दरबार में आने की फुर्सत है और न ही राजकार्यों में कोई दिलचस्पी रह गई है। वह तो संयोगिता के प्रेम में इतना डूब चुका है कि न उसे अपने राज्य का ख्याल है और न ही अपने दुश्मनों का डर। (फिर कुछ रुकते हुए) और महाराज जैसा राजा वैसी प्रजा। उसके सभी दरबारी, ओहदेदार, सिपहसालार, सरदार, थानेदार, हवलदार, चौकीदार सभी के सभी राग–रंग में इतने मस्त हो गये हैं कि उन्हें इनके अलावा कुछ सूझता ही नहीं।

: (खुश होकर) – बस धर्मायण, बस। अब मेरी समझ में सब कुछ आ गया है। पृथ्वीराज चौहान के राज्य में इस समय बहुत–सी कमजोरियों ने घर कर लिया है। इस वक्त वह एकाएक युद्ध करने की स्थिति में नहीं है। परन्तु अभी तक महाराज जयचन्द का कोई समाचार हमारे पास नहीं आया। हम पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने से पूर्व कन्नोज नरेश के रुख को नजरअन्दाज भी तो नहीं कर सकते।

(सहसा चोबदार का प्रवेश)

. जहांपनाह। कन्नोज का दूत कोई गुप्त सन्देश लेकर द्वार पर उपस्थित है और आपसे मिलना चाहता है।

शाहबुद्दीन : उसे बाइज़्ज़त अन्दर आने दिया जाए।

(चोबदार का बाहर जाना व दूत के साथ पुनः प्रवेश करना)

दूत : (अभिवादन करते हुए) - अलीजाह। मैं कन्नौज से महाराज जयचन्द का पैगाम लेकर उपस्थित हुआ हूं। (पत्र देता है)

(शाहबुद्दीन पत्र पढ़ता है)

पत्र का मजमून (जयचन्द की आवाज)

शहन्शाह गजनी को जयचन्द का आदाब अर्ज। पहले अपने मन से हमारे प्रति शिकायत को दूर कीजिए। अब हमारी आपसे विनती है कि तुरन्त अपनी सारी फौजें तैयार करके हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दें। पिछली लड़ाई में पृथ्वीराज के अधिकांश बहादुर सैनिक काम आ चुके हैं और पृथ्वीराज एवं उसके बाकी योद्धा राग-रंग में इतने खो गये हैं कि अब न तो उन्हें राज-काज से कोई मतलब है और न ही अपने दुश्मनों से कोई डर।

यही सही समय है शाह गजनी हिन्दुस्तान पर फतह पाने का। इसलिए देर न करें और तुरन्त फौजें तैयार कर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई कर दें। हमारी फौजें इस जंग में आपका साथ देने को तैयार हैं।

आपका

जयचन्द

शाहबुद्दीन : (सभी की ओर देखकर) - अब हम अपनी विजय के प्रति आश्वस्त हुए। (फिर दूत से) -जाओ दूत। महाराज जयचन्द को कहना हम सेना लेकर शीघ्र पहुँच रहे हैं। (दूत का प्रस्थान। शाहबुद्दीन की हँसी के साथ-साथ प्रकाश मंद होता होता बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

सोलहवां दृश्य

(मंच पर उस्ताद, जमूरे व कजरी का प्रवेश)

कजरी : (घबराते हुए) - अब क्या होगा उस्ताद?

जमूरा : गौरी तो पृथ्वीराज पर चढ़ाई कर रहा है और वे लोग तो अभी युद्ध के लिए तैयार हैं भी नहीं बेचारे।

उस्ताद : (निःश्वास छोड़ते हुए) - हां रे। ये तो चढ़ाई कर रहा है और उन्हें तो अभी तक इसका भान भी नहीं है।

कजरी : अब आगे क्या होगा उस्ताद?

जमूरा : अच्छा खासा नाटक चल रहा था उस्ताद बन्द करा दिया न आपने।

कजरी : अब आगे का भी तो नाटक दिखाओ उस्ताद, बड़ा अच्छा लग रहा था।

उस्ताद : (रूआँसा होकर) - चलो हटो, अब मेरा मूड़ खराब हो गया। अब मैं नहीं दिखाता नाटक-वाटक।

कजरी : देखो उस्ताद दिखा दो आगे का नाटक।

जमूरा : नहीं तो ....

उस्ताद : (बात काटते हुए) - नहीं तो क्या? क्या कर लोगे तुम लोग नहीं तो?

जमूरा व कजरी : नहीं तो हम नारे लगायेंगे।

जमूरा : (हाथ ऊपर करते हुए) उस्ताद!

कजरी : हाय, हाय।

उस्ताद : (दोनों को रोकते हुए) - अरे चुप करो उस्तादो। चुप करो। हम तुम्हारी आधी बात मान लेते हैं।

जमूरा व कजरी : आधी? वो कैसे?

उस्ताद : वो ऐसे भई कि अब मैं इस युद्ध का देखा हुआ हाल संक्षेप में बता देता हूँ।

जमूरा व कजरी . लेकिन उस्ताद हम तो नाटक देखना चाह रहे थ.

उस्ताद : अरे भई। मायूस मत हो। अगर थोड़ा समय मिला तो हम (थोड़ा नाटक और दिखा देंगे। लो अभी तो सुनो, युद्ध में (हुआ--

राग - सोहनी **ताल-एकताल**

धावा किया गौरी ने यों फिर जाय पृथ्वीराज पर।
देश का गद्दार जयचन्द साथ था अभियान पर॥
आ डटे थे युद्ध में तब पृथ्वीराज चौहान भी।
दूर तक था ना अंदेशा युद्ध का विश्वास भी॥
ऐसा हुआ घनघोर मर्दन युद्ध के मैदान में।
देखा नहीं ना ही सुना ऐसा समर संसार में॥
पर क्या करें जब देश में गद्दार पैदा हो गए।
सब ओर थे निश्चिन्त हों रंग राग में थे खो गए।
जयचन्द द्रोही देश का, था साथ गौरी का दिया।
लड़कर मिटे चौहान योद्धा, साथ स्वामी का दिया॥
पृथ्वीराज चौहान तो भी , युद्ध करता ही रहा।
नि:शस्त्र होकर भी वह, उत्साह से लड़ता रहा॥
पर अन्त में बन्दी बना, गौरी उसे लेकर चला।
गजनी चलें बन्दी बने क्या हाल पृथ्वीराज का॥

(दृश्य समाप्त)

****

सत्रहवां दृश्य
स्थान कैदखाना

(पृथ्वीराज चौहान गौरी की जेल में बन्द है। वह कुछ सोचता हुआ जेलखाने में चक्कर लगा रहा है। सहसा एक साधु का प्रवेश)

(स्वगत) हे प्रभु। जो कल तक सबका राजा था, जिसके सिर पर भारतवर्ष का ताज था। उसकी ये दशा। जिन आँखों के डर से बड़े-बड़े प्रतिद्वन्द्वी भी कांपते थे, आज उनकी ज्योति इन आततताइयों ने छीन ली है।

(प्रसन्न हो हवा में दोनों हाथों से टटोलते हुए) – कौन कवि। कहां हो तुम? (वह जैसे ही गिरने को होता है चेतानन्द बने चन्द कवि उन्हें अपनी बाहों में थाम लेते हैं। पृथ्वीराज उन्हे अपने सीने से लगा लेता है, फिर अलग करते हुए) – हे कविराज। भले ही मेरी नेत्र-दृष्टि इन कायरों द्वारा छीन ली गई हो, परन्तु मैं आपके चेहरे पर देशभक्ति के भाव, मातृभूमि की दुर्दशा से उद्‌भित क्रोध की लकीरें देख सकता हूँ, मित्रवर। (फिर सहज होते हुए) – कहो कविराज, आप इतना जोखिम उठाकर यहाँ तक कैसे पहुंचे?

(इधर-उधर देखते हुए धीरे से) महाराज मैं जैसे-तैसे बचता बचाता आप तक आ पहुंचा हूं।

(व्यग्रता से) – यह तो बहुत ही अच्छा हुआ कविवर, जो आप यहां तक आ पहुंचे पर अब दिल्ली राज्य के भी तो समाचार कहो।

(दुःखी होकर) – महाराज। मुहम्मद गौरी ने दिल्ली राज्य मे जो लूटपाट मचाई है. उसकी जो दुर्दशा की है वह बताई नहीं

जा सकती (गला भर आता है। फिर सहज होते हुए) – महाराज! अब आप शोक और सन्ताप छोड़िए। आप बहादुर हैं अतः अब आपकी बहादुरी के प्रदर्शन का और अपने दुश्मन गौरी से बदला लेने का अवसर आ गया है। (पृथ्वीराज नि.श्वास छोड़ते हुए विवशता से) – कैसी बहादुरी! कैसा बदला कविराज! आज हम दृष्टिहीन हैं और हर तरफ से लाचार हैं।

कविचन्द : आप चिन्ता न करें महाराज। मैंने एक युक्ति सोची है।

पृथ्वीराज : (उत्सुकता से) कैसी युक्ति कविराज?

कविचन्द : महाराज मैंने चेतानन्द बनकर गौरी के राज्य में यह प्रचार किया है कि महाराज पृथ्वीराज चौहान शब्दबेधी बाण चलाने में सिद्धहस्त हैं और उनका बाण सीधा वहीं पर जाकर लगता है जहां से शब्द होता है।

मैंने ऐसा प्रबन्ध करा लिया है महाराज कि किले के मैदान में सारी जनता आज आपका यह जौहर देखने को एकत्र होगी। वहीं पर दुष्ट मुहम्मद गौरी भी होगा। बस यही मौका है महाराज गौरी से बदला लेने का, उसे खत्म करने का।

पृथ्वीराज : धन्य हो कविराज, तुम धन्य हो। भारतमाता को तुम जैसे सपूतों पर गर्व है।

अब मैं निश्चिन्त होकर उस कायर गौरी से बदला ले सकूंगा। जाओ मित्र जाओ और आगे की तैयारियां करो। (चन्द का धीरे-धीरे प्रस्थान। प्रकाश धीरे-धीरे कम होता है फिर बुझ जाता है।)

(दृश्य समाप्त)

****

अन्तिम दृश्य

मुहम्मद गौरी के किले का मैदान।

(पृथ्वीराज चौहान के शब्दबेधी बाण का जौहर देखने को भीड़ जमा है मुहम्मद गौरी ऊंचाई पर बैठा है। पृथ्वीराज चौहान को बेड़ियों में जकड़े हुए मैदान में लाया जाता है। कवि चन्द चेतानन्द के रूप में उनके साथ में है।)

: (पृथ्वीराज से) – महाराज पृथ्वीराज। आप तो बड़े बहादुर हैं और सुना है आप शब्दबेदी बाण चलाने में पारंगत हैं। हमारी सारी जनता एवं सैनिक आपका यह कमाल देखना चाहते हैं।

: क्या करूं शाह गजनी। एक महात्मा ने मुझसे इस कार्य को करने का वचन ले लिया है अतः यह जौहर दिखाने को मजबूर हूं परन्तु आप यदि मेरे पाँवों की बेड़ियां खुलवा दें और मेरी कमान मंगवा दें तो अवश्य ही मैं यह जौहर दिखा सकता हूँ।

: (सिपाहियों से) – महाराज पृथ्वीराज के हक्म की तामील हो (सैनिकों द्वारा पृथ्वीराज की बेड़ियाँ खोलना और उसकी कमान लाकर देना)

: (गौरी से) – अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है हुजूर। मेरी बात मानिए और यह बखेड़ा खड़ा मत कीजिए। पृथ्वीराज बहादुर है अतः इसे वापस बेड़ियों में जकड़ दीजिए।

: (क्रोध से) – तुम्हारा दिमाग फिर गया है नश्तर खान। यह अंधा और लाचार हमारा कर ही क्या सकता है?

: (कमान संधानते हुए स्वगत) – हे भगवान। अब तू ही लाज रखना। क्षत्रियों की आन–बान और वचन की रक्षा अब तेरे ही हवाले है प्रभु।

(रणभेरी की आवाज उभरती है जो धीरे–धीरे बढ़ती जाती है और एकाएक रूक जाती है।)

राग - भैरव **ताल - एकताल**

कविचन्दे (संगीत के साथ काव्य पाठ) -

सावधान चौहान हो राख लाज और कान।

ध्यान धरो भगवान का, लेकर हाथ कमान॥

ऊंच नीच का मैं तुम्हें देऊं ठीक प्रमाण।

शत्रु तेरा है जहां सुन ले ठीक निशान॥

चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण।

ता ऊपर सुल्तान है, मत चूके चौहान॥

(पृथ्वीराज द्वारा इस अनुमान के आधार पर छोड़ा गया तीर सीधा मुहम्मद गौरी को जाकर लगता है। वहां उपस्थित लोगों एवं सैनिकों में भगदड़ मच जाती है। इस अवसर का लाभ उठाकर पृथ्वीराज और कवि चन्द एक दूसरे को कटार मारकर इस लोक से प्रयाण कर जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है)..........

(नाटक समाप्त)

गणेश वन्दना

श्री गणनाथ कृपाला बन्दों श्री गणनाथ कृपाला

विघ्न हरन शुभकरण कृपा निधि, निज भक्तन प्रतिपाला जी।

एक रदन शुभ सदन चतुर्भुज दिनकर कोटि उजाला।

मस्तक कीट गुथी मुक्तावलि, गल पुष्पावली माला जी ॥श्री गणनाथ ॥

मूषक वाहन पाषांकुशवर भाल चन्द्रधर बाला जी।

लम्बोदर सुरवर उछंग शिशु मुख प्रसन्न त्रैकाला जी ॥श्री गणनाथ ॥

दक्षिण बाम रिद्ध सिद्ध राजे सज–शृंगार रसाला जी।

लक्ष लाभ सुत बहुशोभायुक्त शोभित विशद विशाला जी ॥श्री गणनाथ ॥

नारद गावत बीन बजावत देत सुशारद ताला जी।

मोदक वासन पद पद्मासन नाशन विघ्न कराला जी। ॥श्री गणनाथ ॥

पीन अंग शोभा अभंग भूषन भुजंग छवि ज्वाला जी।

कई 'बसन्त' जयति जय गणपति कीजै भक्त निहाला जी ॥श्री गणनाथ ॥

15 जुलाई 1999 को रवीन्द्र मंच जयपुर पर की गई प्रस्तुति मे कल्पना निर्देशन दिलीप भट्ट, संगीत निर्देशन–गोपीकृष्ण भट्ट, तमाशा कलाकार

पात्रः

उस्ताद/सूत्रधार	:	दिलीप भट्ट
कजरी	:	अनीता विष्ट
जमूरा	:	हेमू चौधरी
पृथ्वीराज चौहान	:	विजय मिश्रा 'दानिश'
संयोगिता	:	सुनीता तिवारी
शाहबुद्दीन गौरी	:	सिकन्दर अब्बास
जयचन्द	:	अमित सक्सेना
कवि चन्द/चेतानन्द	:	धमेन्द्र शर्मा/राकेश सैन
जोधमल	:	आशीष जैन
पन्ना/धाय माँ	:	श्रीमती उषा नागर
कमास/धर्मायण, सैनिक	:	वैभव माथुर
ताहर	:	सुनील अग्रवाल
दूत	:	आलोक कौशिक
रामसिंह	:	राजेन्द्र कुमार शर्मा
मन्त्री/सेनापति	:	कुमार सन्तोष
राजभट्ट	:	आलोक कौशिक
नख्वार खान	:	अलताफ/कैलाश विजयवर्गीय
चोबदार/दरबारी	:	प्रेमसिंह कन्डेरा, नवनीत शर्मा
तबला	:	गुलाम गौस, त्रिपुरारी सक्सेना, अभिषेक शर्मा
हारमोनियम	:	नसीर खाँ
कोरस	:	लोकेश साहू, अमर किशोर शर्मा, जफ़र खान, सुनील

सैन, अशोक कुमार छापालिया, नितिन गोस्वामी, यदुकुल भूषण, काजल शर्मा

मंच पाश्र्व

मंच–व्यवस्थापकः–नितिन गोस्वामी, राकेश सैन, असलम पठान, धीरज चौधरी

मंच–निर्माणः–शहजोर अली, आलोक पारीक

प्रस्तुति समन्वयकः–विकास रावत, दीपक पारीक

प्रकाश परिकल्पनाः–अभिषेक गोस्वामी, संदीप मदान

वेशभूषाः–राहुल त्रिवेदी, दिलीप विजय, अनीता विष्ट, रेनू रानी शर्मा

रूप सज्जाः–राधेलाल